सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 19 मई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 249, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

ढही हुई इमारतों के बीच
आधी रात को एक बच्चा बैठा था अकेला
आसमान के नीचे
भूखा नंगा हताश और उदास
आँसुओं के रेले सूख चुके थे गालों पर
धुएँ के गुबार में शाम उसने पूछा था
मेरे माँ–बाप कहाँ हैं
किसी ने कहा था
तेरे माँ–बाप आकाश चले गए हैं
और वहाँ तारे बन गए हैं
बच्चा एकटक ताकता रहा तारों को
इस आस में कि उसके माँ–बाप
उतरकर आएँगे उसके पास और
लाएँगे उसके लिए खाना, कपड़ा
और दुलार
सुबह बच्चे की निर्जीव देह
पड़ी थी वहीं
वृक्ष से झरे फूल की तरह
माँ–बाप नहीं आए तो बच्चा चला गया
माँ–बाप से मिलने।

– चंद्रशेखर साकल्ले

पहली बात

‘ऑपरेशन-सिंदूर’: ‘आवाज दो... हम एक हैं...हम एक हैं’

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

एक-दूसरे के पूरक दो कौमी तराने (1) आवाज दो हम एक हैं, हम एक हैं, (2) वतन की आबरू खतरे में है, तैयार हो जाओ, तैयार हो जाओ... जब से होश सँभाला, जहन में वतनपरस्ती को हमेशा सक्रिय रखने का सबब रहे हैं। पहला गीत जां निसार अख्तर ने लिखा था। दूसरा तराना साहिर लुधियानवी ने रचा था। इन्हें संगीत में ढाला था खय्याम ने। फिल्म-डिवीजन की डॉक्युमेंट्री के रूप में रोजाना सिनेमा के पर्दे पर दिखने वाले इन तरानों के निर्माता थे प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक महबूब खान...। इन तरानों की उम्र लगभग तिरसठ वर्ष है। उम्र और जज्बाती समझ के पहले दशक 1962 में भारत-चीन युद्ध के दरम्यान इन गीतों को सुना था। उम्र के उस मुकाम पर ये तराने भारत की जमीन और उसके इतिहास-भूगोल की वीर-गाथाओं से जहन को इस तरह तराशते थे कि देश का अक्स मिटाए नहीं मिट पाता था। सच्चे हिंदुस्तानी होने का जुनून और जज्बा जिंदगी का हिस्सा बना रहता था। बाद मे पता चला कि जोशो-खरोश से सराबोर कौमी तराने चीन से युद्ध के बाद उभरी हताशा से उबरने का आव्हान थे।

बहरहाल,1962 की हताशा के बाद 1965 में भारत-पाकिस्तान के युद्ध और 1971 में बांगला-देश की लड़ाइयों के उत्कर्ष के दौरान इन तरानों की गर्जना ने रगों मे बहते खून में बकायदा गरमाहट घोलने का काम किया था। और, फिलवक्त ‘ऑपरेशन-सिंदूर’ इन तरानों को उसी गरमाहट के साथ जिंदगी और जहन में फिर वापस लौटा लाया है। साठ वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन वीर रस की खनक से भरपूर दोनो गीत जहन में आज भी जिंदा हैं। हिंदुस्तान की जवानी और रवानी का इम्तिहान लेते रहते हैं। भरोसा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हम-उम्र अथवा उनसे दस साल छोटे-बड़े, ज्यादातर लोगों की यादों में इन तरानों की धमक,गमक और दमक निश्चित ही आज भी ज्यौं की त्यौं बरकरार होगी।

पाकिस्तान और चीन के खिलाफ भारत की किसी भी सैन्य-कार्रवाई अथवा युद्ध के बैक-ड्रॉप में ये तराने किन्ही भी परिस्थितियों में हारने-जीतने से ज्यादा भारत की एकता-अखंडता को शिखर पर रखने का संदेश देते हैं। युद्ध में नफे-नुकसान की बुनियाद पर देश की राजनीति और कूटनीति मे लाभांश अर्जित करने की कोशिशें नाजायज होती हैं। पक्ष-विपक्ष को इससे बचना चाहिए। जां निसार अख्तर और साहिर लुधियानवी के तरानों में बयां राजनीतिक और सामाजिक एकता देश में लड़ी गई पहली तीन लड़ाइयों में बकायदा अमल में भी नजर आई। पक्ष-विपक्ष की पुरानी सियासी इबारत में यह बकायदा दर्ज भी है। 1962 के चीन-युद्ध की हताशा और 1965 एवं 1971 में पाकिस्तान को धूल चटाने वाली लड़ाइयों में देश की एकता हर कसौटी पर खरी साबित हुई थी।

लेकिन,‘ऑपरेशन-सिंदूर’ की सफलताओं के अफसानों पर खाक डालने की कोशिशें सेना के ऐहतराम या सम्मान को धुंधला कर रहीं हैं। ताजा फौजी-कहानियों को ट्विस्ट करने की शरारतें ‘ऑपरेशन-सिंदूर’ से उद्भूत राजनीतिक मतैक्यता में खलल डालने लगी हैं। 12 मई को राष्ट्र के नाम अपने उद्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की एकता का खासतौर से उल्लेख करते हुए कहा था कि ‘‘पूरा देश, हर नागरिक, हर समुदाय, हर वर्ग एकजुटता से आतंकवाद के खिलाफ खड़ा रहा’’। जाहिर है कि यह एकता बनी रहना चाहिए।

दिक्कत यह है कि कूट-तत्वों की कांव-कांव सिंदूरी-एकता के खूबसूरत कलरव की उस एकात्मक लय को खंडित कर रही है, जिसकी अनुगूंज में राष्ट्र-गान की गीतिका और गतिशीलता तथा कौमी तरानों की जिद और जुनून नजर आता है।‘ऑपरेशन-सिंदूर’ का इतिहास महज पंद्रह दिन पुराना है। राष्ट्रीय-संकट टला भी नही हैं। संकट की इन घड़ियों में देश की एकता ही सफलता काएक मात्र ताबीज है। पाकिस्तान की कोशिश थी कि पहलगाम में 26 लोगो की नृशंस हत्या भारत में सांप्रदायिक तनाव का सबब बने और दंगे सुलग उठें। भारत की राष्ट्रीय एकता ने इस नापाक साजिश का मुंहतोड़ जवाब देने के साथ ही सैन्य- बलों की सफलता में चार चांद लगाने का काम किया है।

विडम्बना यह है कि युद्ध-विराम के बाद सैन्य-सफलताओं का लाभांश हासिल करने के लिए ऑपरेशन-सिंदूर के फलक पर सियासी परिन्दे उड़ान भरने लगे हैं। पक्ष-विपक्ष के राजनेता राष्ट्रीय एकता की अपरिहार्यता को समझने में लगभग नाकामयाब हैं। कतिपय राजनेताओं की नासमझ चुहलबाजी ही सांप्रदायिक सदभाव को आहत करने के लिए जिम्मेदार है। सोशल-मीडिया पर सेना के अधिकारियों के खिलाफ असंयत सांप्रदायिक ट्रोलिंग का नुकसान अलग है। महज पंद्रह दिनों में ही राष्ट्र की भावनात्मक-एकता और प्रतिबद्धता में यह विघटन चौंकाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में स्वाभाविक ही कुछ सवाल उत्तर ढूंढते हुए सामने खड़े हो जाते हैं कि इन परिस्थितियों के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या यह वोटों की खातिर जरूरी सामाजिक ध्रुवीकरण की विभाजनकारी राजनीति का प्रतिबिम्ब है? समझ से परे है कि पहलगाम के आतंकी हमले में मारे गए नौसेना अधिकारी की पत्नी को क्यों ट्रोल किया गया? उसकी अपील में क्या खोट था कि हादसे के लिए मुस्लिमों या कश्मीरियों को निशाना नहीं बनाया जाए? संघर्ष विराम की घोषणा करने वाले विदेश सचिव विक्रम मिसरी, उनके परिवार और बेटी को भी ऑनलाइन ट्रोल करनेका सबब क्या है? ट्रोल करने वाले उनकी बेटी के पेशेवर काम में सांप्रदायिक दृष्टिकोण ढूंढ कर क्या स्थापित करना चाहते थे?

इसी तारतम्य में भारतीय सेना की कर्नल सोफिया कुरैशी के बारे में मप्र के कैबिनेट मंत्री विजय शाह का बयान भी सांप्रदायिक सद्भावनाओं को दूषित करने वाला है। विजय शाह के कथन में साम्प्रदायिक उन्माद की हदों का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनके बयान पर मप्र उच्च न्यायालय तक उव्देलित हो उठा। हाईकोर्ट के जजों ने इस बयान का स्वतः संज्ञान लेकर उनके खिलाफ पुलिस में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिये हैं। विजय शाह के इस्तीफे को लेकर राजनीतिक बवाल भले ही अपने पूरे परवान पर हो, लेकिन भाजपाई नेतृत्व ने कोर्ट के फैसले के इंतजार में खामोशी अख्तियार करके मामले को पीछे ढकेल दिया है।

देश की राजनीतिक और कूटनीतिक एकाग्रता और लयबद्धता में पक्ष-विपक्ष के बीच मतभेदों का खलल आतंकवाद की चुनौतियों को गहराने वाला है। राजनीति में सिंहासन की विरूदावली और विरोध की भाषा का सुनिश्चित व्याकरण होता हैं। प्रशंसा और प्रतिरोध की शब्दावली में विराम और अल्प-विराम का अपना अनुशासन होता है। मुहावरों की धार को पहचानने के तकाजे अलग होते हैं। राजनीति और कूटनीति में भाषा की समग्रता के लिए इन सभी तत्व को समझना जरूरी हैं। भाषायी संतुलन, समन्वय और समरसता ही सही अर्थो मे लोकतंत्र की अवधारणाओं को सम्मानित और मजबूत करते हैं।

विडम्बना यह है कि राजनीति की वर्तमान भाषा और मुहावरों में मुल्क और समाज की एकता की आवाज नदारद सी है। समरसता सूख चुकी है। सांप्रदायिक नुक्ताचीनी सामंजस्य में खराश पैदा करती है। शायद इसीलिए जाँ निसार अख्तर का तिरसठ साल पुराना कौमी नगमा आज भी गुहार लगाता महसूस हो रहा है कि- ‘‘आवाज दो हम एक हैं...हम एक हैं...यह वक्त सोने का नहीं, यह वक्त खोने का नहीं...जागो वतन खतरे मे है...सारा चमन खतरे में है’’। अथवा उतने ही पुराने नगमे में साहिर लुधियानवी आगाह करते हैं कि ‘वतन की आबरू खतरे में है, तैयार हो जाओ, तैयार हो जाओ’...मौजूदा सियासत के तासीर को बदलने के लिए इन दोनो तरानों उदभासित राष्ट्वाद को समझना जरूरी है...। **(क्रमशः)**

सहकारी यूनिवर्सिटी के बारे में सोच रही है सरकार

अहमदाबाद सहकारिता महासम्मेलन में बोले अमित शाह- डेयरी उद्योग को आगे बढ़ाने हम देंगे सभी उपकरण

अहमदाबाद (एजेंसी)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह शनिवार से दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। अपने दौरे के दूसरे दिन रविवार को वे अहमदाबाद की साइंस सिटी में हो रहे गुजरात स्टेट सहकारी संघ कार्यक्रम में शामिल हुए। यहां उन्होने सहकारी समितियों को अध्यक्षों और किसानों से बातचीत की। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि वर्ष 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। इसकी शुरुआत भारत से हुई है। दिल्ली में भी एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जहां प्रधानमंत्री ने सहयोग से समृद्धि का नारा दिया। आज गुजरात में एक सहकारी सम्मेलन आयोजित किया गया है। हमें सहयोग में परिवर्तन को नीचे तक ले जाना होगा। सहकारी समितियों के विकास के लिए केंद्र सरकार सहकारी यूनिवर्सिटी खोलने पर भी विचार कर रही है। गृहमंत्री ने आगे कहा कि यदि सहकारी समितियों को बढ़ावा देना है तो जागरुकता पैदा करनी होगी। इसमें सहकारी विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर देना होगा। मैं सभी सहकारी नेताओं से कहना चाहूंगा कि वे आखिरी स्तर तक के साथियों का सहयोग करें। प्रत्येक सदस्य, समिति एवं संगठन का जिला सहकारी बैंक में बैंक खाता होना चाहिए। गुजरात को सहकारी विश्वविद्यालयों के लिए अग्रणी बनने की आवश्यकता है। भाजपा सरकार सहकारी संगठनों के जरिए डेयरी के लिए आवश्यक सभी उपकरण उपलब्ध कराएगी। यह प्रयोग गुजरात से ही शुरू होगा। इससे पहले शनिवार को उन्होंने गांधीनगर में 1100 करोड़ रुपए की 78 परियोजनाओं का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा- मोदीजी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से तीन हमले हुए हैं और तीनों का जवाब दिया है।

पीएम मोदी ने हर हमले का करारा जवाब दिया

शनिवार को गृहमंत्री ने गांधीनगर के कोलवाड़ा में एक जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा- मोदीजी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से तीन हमले हुए हैं और मोदीजी ने तीनों ही आतंकी हमलों का मुंहतोड़ जवाब दिया है। उरी को सर्जिकल स्ट्राइक से, पुलवामा को एयर स्ट्राइक से और अब ‘ऑपरेशन सिंदूर’ से पाकिस्तानी मुख्यालय को मिटा दिया गया है। 100 किमी अंदर घुसकर 100 से ज्यादा आतंकी मारे हमारी सेना ने पाकिस्तान के अंदर 100 किमी तक घुसकर आतंकियों के 9 ठिकानों को तबाह किए। इसके अलावा 100 से ज्यादा आतंकियों को मारा। पाकिस्तान ने कच्छ से कश्मीर तक हमले का दुस्साहस किया, लेकिन हमारी सेना ने हर हमले को विफल किया। एक भी मिसाइल भारत में नहीं गिरी।

भोपाल के समरधा में भोज-नर्मदा द्वार बनेगा : मुख्यमंत्री

भूमिपूजन किया; नीमच में स्थापित 10 मेगावाट सौर ऊर्जा प्लांट का लोकार्पण भी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के होशंगाबाद रोड स्थित समरधा में भोज-नर्मदा द्वार बनेगा। इसके लिए रविवार सुबह सीएम डॉ. मोहन यादव ने भूमिपूजन किया। उन्होंने नगर निगम, भोपाल द्वारा सौर ऊर्जा परियोजना के प्रथम चरण में नीमच में स्थापित 10 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का भी लोकार्पण किया।

कार्यक्रम में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, विश्वास सारंग, कृष्णा गौर, सांसद आलोक शर्मा, विधायक रामेश्वर शर्मा, भगवानदास सबनानी, महापौर मालती राय, निगम अध्यक्ष कैलाश सूर्यवंशी, बीजेपी जिलाध्यक्ष रविंद्र यति भी मौजूद थे। बता दें कि नगर निगम भोपाल के दो मुख्य स्थानों पर द्वार बनवा रहा है। इसके लिए निगम परिषद की बैठक में प्रस्ताव भी पास हो चुका है। पहला गेट होशंगाबाद रोड और दूसरा इंदौर-भोपाल रोड पर प्रस्तावित है। एक द्वार के लिए आज भूमिपूजन हुआ, जबकि दूसरे द्वार के लिए जल्द ही प्रक्रिया पूरी की जाएगी। इंदौर-भोपाल रोड पर विक्रमादित्य द्वार बनाया जाएगा।

अन्य प्रवेश मार्गों पर भी बनेंगे द्वार- नगर निगम ने फिलहाल दो प्रमुख मार्गों पर भव्य द्वार बनाने की कार्ययोजना तैयार की है। ऐसी ही प्लानिंग अन्य मुख्य सड़कों यानी बैरसिया रोड, रायसेन रोड, कोलार रोड, विदिशा रोड, मुबारकपुर समेत अन्य के लिए भी बनाई जा रही है।

प्रदेश की पहचान वीर शासकों से हो रही: सीएम- भूमिपूजन से पहले सीएम डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की पहचान हमारे वीर शासकों से रही है। मध्यप्रदेश का गौरव रहे सम्राट विक्रमादित्य को आज भी न्यायप्रियता, पराक्रम और लोक कल्याण के लिये जाना जाता है। वहीं राजा भोज को महान शिक्षक और योद्धा के रूप में याद किया जाता है।

सौर ऊर्जा संयंत्र का लोकार्पण

नगर निगम द्वारा सौर ऊर्जा परियोजना के प्रथम चरण में नीमच में स्थापित 10 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का भी मुख्यमंत्री ने लोकार्पण किया। इस दौरान मंत्री, सांसद, विधायक, महापौर, निगम अध्यक्ष, एमआईसी मेंबर और पार्षद मौजूद रहे। सौर ऊर्जा परियोजना के प्रथम चरण में नीमच में स्थापित 10 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का भी मुख्यमंत्री ने लोकार्पण किया।

हैदराबाद में दर्दनाक हादसा, 17 लोगों की मौत

इनमें 8 बच्चे, 10 जख्मी; 15 को बचाया, शॉर्ट सर्किट से दुर्घटना की आशंका

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना की राजधानी से एक बड़ी खबर सामने आई है। यहां ऐतिहासिक चारमीनार के पास स्थित गुलजार हाउस में रविवार सुबह आग लग गई। इमारत में लगी इस भीषण आग की चपेट में आने से 17 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में बच्चे और महिलाएं भी शामिल हैं। घटना पर पीएम मोदी

और मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने घटना पर शोक जताया है। वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देश दिया कि इमारत में फंसे लोगों को बचाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं। जिस बिल्डिंग में आग लगी है, वह शहर की फेमस इमारत है। यह आग शहर के सबसे बड़े आग हादसों में से एक बन गई है।

भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर का जारी किया नया वीडियो

जहां से सीजफायर उल्लंघन हुआ, उसे मिट्टी में मिला दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना ने रविवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर ऑपरेशन सिंदूर का एक नया वीडियो जारी किया। सेना की पश्चिमी कमान ने एक्स पर एक वीडियो पोस्ट किया। सेना ने कहा, प्लान किया, ट्रेनिंग दी और पूरा किया। उन्होंने आगे कहा, इंसाफ हुआ। वीडियो में, एक सुरक्षाकर्मी को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान के लिए एक सबक था। ऐसा सबक जो उसने दशकों से नहीं सीखा था। सेना के जवान ने कहा, इसकी शुरुआत पहलगाम आतंकी हमले से हुई। गुस्सा पिघले हुए लावा की तरह था। मन में बस एक ही विचार था - इस बार, हम ऐसा सबक सिखाएंगे कि उनकी पीढ़ियां याद रखेंगी। यह बदला लेने का काम नहीं था, यह न्याय था। 9 मई की रात लगभग 9 बजे, भारतीय सेना ने दुश्मन पोस्ट को नष्ट कर

दिया जिसने युद्धविराम का उल्लंघन किया था। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक कार्रवाई नहीं थी; यह पाकिस्तान के लिए एक सबक था, जो उसने दशकों से नहीं सीखा था। भारत ने पिछले महीने जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में 7 मई को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाते हुए ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया था। इस हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी। भारत की कार्रवाई के बाद, पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा और जम्मू और कश्मीर में गोलाबारी की। सीमावर्ती क्षेत्रों में ड्रोन से हमले करने की कोशिश भी की गई। इसके बाद भारत ने एक समन्वित हमला किया और पाकिस्तान में 11 एयरबेस पर रडार सिस्टम, संचार केंद्रों और हवाई क्षेत्रों को निशाना बनाया।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 19 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भोपाल-इंदौर समेत 30 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट

विदिशा, राजगढ़ जिले में तेज हवाओं के साथ पानी गिरा, 10 जिलों में लू का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में रविवार को भी कई जिलों में आंधी-बारिश का दौर जारी है। विदिशा जिले के सिरोंज और राजगढ़ जिले के ब्यावरा में दोपहर बाद तेज हवाओं के साथ बारिश होने लगी। जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

मौसम विभाग ने भोपाल, इंदौर और उज्जैन समेत 30 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, अगले कुछ घंटों में मध्यप्रदेश के सिंगरौली, भोपाल, बैतूल, उज्जैन और आगर में तेज आंधी चल सकती है। यहां गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होने की संभावना जताई गई है।

वहीं, पांढुर्णा, डिंडौरी, बड़वानी, धार, बुरहानपुर, खरगोन, नीमच, मंदसौर, रतलाम, इंदौर, राजगढ़, शाजापुर, सीहोर में भी

बारिश होने की संभावना है। विदिशा, मुरैना, गुना, अशोकनगर, सागर, रीवा, मऊगंज, सीधी, टीकमगढ़, छतरपुर, सतना, शिवपुरी और अनूपपुर में भी मौसम बदल सकता है।

दूसरी ओर प्रदेश के कई जिलों में गर्मी का असर भी दिखाई दे रहा है। अगले 4 दिन यानी, 21 मई तक दिन में लू चलने का अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार, रविवार को ग्वालियर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, गुना, अशोकनगर में हीट वेव यानी, गर्म हवाएं चल सकती है। वहीं, सीधी और उमरिया में रातें गर्म रहेंगी। यहां न्यूनतम तापमान सामान्य से 4-5 डिग्री अधिक रह सकता है।

इसलिए हो रहा ऐसा मौसम- सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, तीन साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम इन दिनों एक्टिव है। इनका असर मध्यप्रदेश में भी देखने को मिल रहा है। इस कारण आंधी और बारिश हो रही है। अब गर्मी का असर भी देखने को मिल रहा है। अगले चार दिन तक आंधी, बारिश के साथ लू का भी अलर्ट है।

बैंककर्मी समेत तीन युवक नदी में डूबे

मृतकों में दो सगे भाई ; मामा के लड़के को बचाने में गई जान

मऊगंज (नप्र)। मऊगंज जिले में तीन भाइयों की नदी में डूबने से मौत हो गई। हादसा रविवार सुबह करीब 10 बजे हुआ। तीनों भाई पैपखार गांव में निहाई नदी में नहाने गए थे। करीब दो घंटे बाद तीनों को नदी से निकाला जा सका। परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

अभिषेक मिश्रा | अभय तिवारी | अमन तिवारी

मृतकों में दो सगे भाई अमन तिवारी (18), अभय तिवारी (17) समेत उनके मामा का बेटा अभिषेक मिश्रा (24) शामिल हैं।

रविवार सुबह तीनों नहाने के लिए निहाई नदी गए थे। जहां अभिषेक गहरे पानी में चला गया। उसे बचाने के लिए अमन और अभय भी पहुंचे। लेकिन गहराई का अंदाजा नहीं होने से वे भी डूब गए।

पोस्टमॉर्टम के बाद परिजन को सौंपे शव

तीनों युवकों की चीख-पुकार सुनकर स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे। पुलिस को सूचना दी। कड़ी मशक्कत के बाद शव बाहर निकाले जा सके। पोस्टमॉर्टम मऊगंज सिविल अस्पताल में किया गया। अमन-अभय के पिता अनिल तिवारी पेशे से रजिस्ट्री लेखक हैं।

अभिषेक मिश्रा मऊगंज के दुगोली गांव का रहने वाला था। बड़ा भाई सत्य प्रकाश मिश्रा आईआईटी की तैयारी कर रहा है। सबसे बड़ी बहन है। अभिषेक एचडीएफसी बैंक की मऊगंज ब्रांच में क्लर्क था। शनिवार को ड्यूटी के बाद बुआ के घर पैपखार आया था। वहीं, अमन (18) और अभय (17) बारहवीं क्लास में पढ़ रहे थे।

मप्र में पहली बार वर्चुअल म्यूजियम का मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन

कहा-उज्जैन देश का केंद्र, यहां के सिक्के विदेश तक मशहूर

मुख्यमंत्री ने विश्व संग्रहालय दिवस पर राज्य संग्रहालय में इमर्सिव एक्सपीरियंस सेंटर का लोकार्पण कर अवलोकन किया

भोपाल (नप्र)। अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर रविवार को भोपाल के स्टेट म्यूजियम में 'संग्रहालय मेला' आयोजित किया जा रहा है। मेले का औपचारिक शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया। उन्होंने मेले का भ्रमण किया और विभिन्न वस्तुओं को देखा। डॉ. यादव ने कहा कि पुरातत्व के मुताबिक उज्जैन देश का केंद्र है। उज्जैन के कई सिक्के विदेश तक में मशहूर हैं। सिक्कों पर राजा का चिह्न बदलता रहा, पर महाकाल के मंदिर का चिन्ह हमेशा रहा।

संग्रहालय घूमने के शौकीन लोगों को मप्र में पहली बार वर्चुअल म्यूजियम का अनुभव मिलेगा। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने मध्य प्रदेश के पहले इमर्सिव हेरिटेज म्यूजियम का शुभारंभ किया। म्यूजियम में ओरछा को 360 डिग्री पर वर्चुअल देखा जा सकता है। इसके अलावा मॉन्यूमेंट ऑफ ओरछा समेत पुरातत्व विभाग से जुड़ी 11 पुस्तकों का विमोचन किया। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के समाचार पत्र के दूसरे संस्करण और वाकणकर शुभंकर का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने प्रयास किया है कि 12 कुंभ के हिसाब से 12 राशियों को एक साथ लाया जाए। सरकार लगातार देश के पुरातत्व इतिहास को संजोए रखने का कार्य कर रही है। कार्यक्रम में बताया गया कि मध्य प्रदेश में एक चौथाई यूनेस्को साइड हैं। प्रदेशभर में 24 म्यूजियम हैं, जिसमें से सात राज्य स्तरीय हैं। इसके अलावा सांस्कृतिक विभाग के अलग म्यूजियम हैं। वहीं बुरहानपुर में नया म्यूजियम खोला जा रहा है। इसके साथ ही दमोह में भी रानी दुर्गावती से जुड़ा म्यूजियम बनाया जाएगा।

यह डिजिटल केंद्र संग्रहालय की ऐसी सैर कराएगा, जैसी आपने पहले कभी नहीं की होगी। बिना किसी गाइड या फिजिकल मूवमेंट के आप एक इंटरेक्टिव और इमर्सिव तकनीक के जरिए संग्रहालय की गहराई में उतर सकेंगे। संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदेशभर में कई ऐतिहासिक कार्यक्रम हो रहे हैं।

भारत की सौर परंपरा पर दुर्लभ फोटो प्रदर्शनी

इतिहास और आर्ट लवर्स के लिए एक और खास आकर्षण है 'भारत की सौर परंपरा' पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी। यहां आपको देश के प्रमुख सूर्य मंदिरों और उनसे जुड़ी कलात्मक मूर्तियों की झलक देखने को मिलेगी। यह प्रदर्शनी हर दिन सुबह 10:30 से शाम 5:30 बजे तक आमजन के लिए निःशुल्क खुली रहेगी।

इस मेले में खासतौर पर बच्चों के लिए रचनात्मक कार्यशालाएं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, शैक्षणिक गतिविधियां और विशेष प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी, जो न केवल मनोरंजन करेंगी बल्कि जानकारी भी बढ़ाएंगी।

राजधानी ही नहीं, अन्य शहरों में भी होगा उत्सव

ग्वालियर- मोती महल में अतीत से भविष्य के सेतु : हमारे संग्रहालय विषय पर व्याख्यानमाला

इंदौर- 'विंटेज इंदौर' विषय पर प्रदर्शनी और सेमिनार

जबलपुर- 'कृषि संस्कृति में बलराम' विषयक प्रदर्शनी और 'धरोहर' पर व्याख्यानमाला

क्यों जाएं 'संग्रहालय मेला'?

पहली बार वर्चुअल म्यूजियम एक्सपीरियंस-तकनीक और इतिहास का संगम

दुर्लभ फोटोग्राफ्स और मंदिरों की कहानियां

बच्चों के लिए फन+लर्न एक्टिविटीज

भारत में कई बांग्लादेशी प्रोडक्ट्स की लैंड-पोर्ट से एंट्री बैन

- रेडीमेड कपड़े और प्रोसेस्ड फूड अब चुनिंदा रूट्स से आएंगे, नोटिफिकेशन जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने शनिवार को व्यापार नियमों में बदलाव करते हुए बांग्लादेश से आने वाले फल, कार्बोनेटेड ड्रिंक्स, प्रोसेस्ड फूड, कॉटन, प्लास्टिक और लकड़ी

के फर्नीचर के नार्थ ईस्ट के लैंड पोर्ट से इम्पोर्ट पर प्रतिबंध लगा दिया है। भारत के मिनिस्ट्री ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अंतर्गत आने वाले डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड ने इसे लेकर नोटिफिकेशन जारी किया। नोटिफिकेशन के मुताबिक बांग्लादेश से रेडीमेड गारमेंट का इम्पोर्ट अब सिर्फ न्हावा शेवा (जवाहर पोर्ट) और कोलकाता पोर्ट के जरिए ही किया जा सकेगा।

मायावती ने फिर करा दी भतीजे आकाश की धमाकेदार वापसी

- पार्टी में दे दी बड़ी जिम्मेदारी, बीएसपी का नेशनल कोआर्डिनेटर बनाया

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के भतीजे आकाश आनंद की पार्टी में धमाकेदार वापसी हुई है। आकाश आनंद

को बसपा का मुख्य नेशनल कॉर्डिनेटर बनाया गया है। दिल्ली में रविवार को हुई बैठक में बसपा सुप्रीमो मायावती ने यह फैसला लिया है। शनिवार पार्टी की बैठक में शामिल होने के लिए आकाश आनंद मायावती के साथ पहुंचे थे। बीते दिनों आकाश आनंद की पार्टी में वापसी हुई थी। जिसके बाद से उम्मीद जताई जा रही थी कि जल्द ही आकाश आनंद को पार्टी में बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। रविवार को आकाश को बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी गई है।

बिहार में पीके के साथ आए आरसीपी, अब होगा 'खेला'

- राजनीतिक रूप के बड़ा घटनाक्रम, चुनाव में पड़ेगा असर

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजनीति में रविवार को बहुत बड़ा घटनाक्रम देखने को मिला है। घटनाक्रम यह है कि पूर्व केंद्रीय मंत्री आरसीपी सिंह ने अपनी पार्टी 'आप सबकी आवाज' का प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज में विलय कर दिया है। बिहार में अगले कुछ महीने में विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं और इस चुनाव में बीजेपी-जेडीयू की अगुवाई वाले एनडीए गठबंधन और राजद-कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच सीधा और जोरदार मुकाबला है। इसके अलावा जन सुराज पार्टी, एआईएमआईएम सहित और भी कई राजनीतिक दल बिहार के विधानसभा चुनाव में अपना दम-खम दिखाएंगे। इसका असर विधानसभा चुनाव में होगा।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाक को लगा एक और बड़ा झटका

- आईएमएफ ने एक साथ ठोक दी 11 शर्तें, दे दी बड़ी चेतावनी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत के हाथों पिटाई के बाद पाकिस्तान को एक बड़ा झटका लगा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने ऐसा कदम उठाया है, जिससे कंगाली में

डूबा पाकिस्तान बड़ी मुश्किल में फंस सकता है। आईएमएफ ने अपने बेलआउट कार्यक्रम की अगली किस्त जारी रखने के लिए पाकिस्तान पर 11 नई शर्तें लगाई हैं। इसके साथ ही चेतावनी दी है कि भारत के साथ तनाव योजना के राजकोषीय, बाह्य और सुधार लक्ष्यों के लिए जोखिम को बढ़ा सकता है। आईएमएफ ने पाकिस्तान के सामने जो 11 शर्तें रखी हैं, उनमें 17.6 ट्रिलियन पाकिस्तानी रुपये के नए बजट को संसद की मंजूरी, बिजली बिलों पर कर्ज सेवा अधिभार में वृद्धि और तीन साल से अधिक पुरानी कारों के आयात पर प्रतिबंध हटाना शामिल है।

जो दुस्साहस करेगा उसे हर हाल में सबक सिखाएगा भारत

- राजस्थान के जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में बोले संघ प्रमुख मोहन भागवत

जयपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने शनिवार को कहा- भारत किसी से शत्रुता नहीं करता है, लेकिन कोई दुस्साहस करेगा तो उसे सबक सिखाने से भी पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा- दुनिया प्रेम और मंगल की भाषा भी तब ही सुनती है, जब आपके पास शक्ति हो। यह दुनिया का स्वभाव है, इसको बदला नहीं जा सकता। इसलिए विश्व कल्याण के लिए हमें शक्ति संपन्न होने की आवश्यकता है। डॉ. भागवत जयपुर के सीकर रोड स्थित रविनाथ आश्रम में आयोजित रविनाथ महाराज की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा- लोगों के मन में आ रहा होगा कि मैं रविदास आश्रम क्यों आया हूं। यह वाजिब भी है। लेकिन मैं रविदास जी का भक्त हूं, उन्हीं के कारण आश्रम में आया हूं। मोहन भागवत ने आश्रम में अपने

संबोधन की शुरुआत भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं से की। उन्होंने भारत को विश्व का सबसे प्राचीन देश बताते हुए उसकी भूमिका बड़े भाई की बताई। उन्होंने कहा- भारत विश्व में शांति और सौहार्द के लिए काम कर रहा है। भारत सब क्षेत्रों में प्रगति करेगा। भारत किसी से शत्रुता नहीं करता है, लेकिन कोई दुस्साहस करेगा तो सबक सिखाने में भी पीछे नहीं हटता है। उन्होंने कहा- भारत जिन दूसरे राष्ट्र की मदद करता है, वो देश कभी-कभी विपरीत धाराओं में बहते हैं, फिर भी हम मदद करते हैं। क्योंकि हमारे मन में सहयोग का भाव रहता है। हम कई देशों के बड़े भाई हैं, लेकिन बड़ा भाई होने का घमंड नहीं करना है। बल्कि बड़े भाई का फर्ज निभाते हुए छोटों को सही नसीहत देनी है।

ईओएस-09 सैटेलाइट को स्थापित करने से चूका इसरो

तीसरे स्टेज में फेल हुआ 101वां मिशन, चीफ ने कहा-जांच कर रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने रविवार को अपने 101वें मिशन के तहत ईओएस-09 सैटेलाइट को पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल के जरिए लॉन्च किया, लेकिन यह मिशन कुछ ही मिनटों में असफल हो गया। पीएसएलवी-सी61 रॉकेट 44.5 मीटर ऊंचा और 321 टन वजनी था। यह सुबह 5.59 बजे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के पहले लॉन्च पैड से रवाना हुआ। इसरो के अनुसार, रॉकेट के पहले और दूसरे चरण ने सामान्य रूप से काम किया, लेकिन तीसरे चरण में खामी देखी गई। इस चरण में एक ठोस रॉकेट मोटर होता है। नारायणन ने कहा, तीसरे चरण का मोटर पूरी तरह शुरू हुआ, लेकिन इसके संचालन के दौरान एक खामी दिखी जिसके कारण मिशन को पूरा नहीं किया जा सका। ईओएस-09 को सूर्य समकालिक ध्रुवीय कक्षा में स्थापित किया जाना था, लेकिन तकनीकी समस्या के चलते सैटेलाइट को उसकी निर्धारित कक्षा में नहीं पहुंचाया जा सका। इसरो प्रमुख वी नारायणन ने कहा कि संगठन इस विफलता के कारणों का गहन विश्लेषण कर रहा है। उन्होंने आश्वासन दिया कि टेलीमेट्री डेटा की पूरी जांच के बाद विस्तृत जानकारी शेयर की जाएगी। इसरो ने यह भी पुष्टि की कि 2025 में चार और पीएसएलवी

प्रक्षेपण निर्धारित हैं, और इस असफलता से सबक लेकर भविष्य के मिशनों को और मजबूत किया जाएगा। इसरो ने एक्स पर लिखा, पीएसएलवी-वी 61 का प्रदर्शन दूसरे चरण तक सामान्य रहा। तीसरे चरण में एक तकनीकी ऑब्जर्वेशन के कारण मिशन पूरा नहीं हो पाया। गौरतलब है कि ईओएस-09 एक एडवांस पृथ्वी ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है, जिसमें सी-बैंड सिंथेटिक एपर्चर रडार तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। यह सैटेलाइट किसी भी मौसम और दिन-रात में धरती की सतह की हाई-रिजॉल्यूशन तस्वीरें लेने में सक्षम है, जो कृषि, वन क्षेत्र प्रबंधन, आपदा प्रबंधन और रक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पहलगाम हमले के पहले पाकिस्तान गई थी यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा

- भारत से निकाले गए पाकिस्तानी अफसर से संबंध थे, पाक दूतावास में जाती रहती थी

हिसार (एजेंसी)। हरियाणा से जासूसी के आरोप में पकड़ी गई यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा की भारत से निकाले गए पाकिस्तानी अफसर दानिश से नजदीकी थी। उसके यूट्यूब चैनल 'ट्रैवल विद जो' पर अपलोड किए गए वीडियो से ही इस बात का पता चला। इसके बाद पूछताछ में ज्योति ने इस बात की पुष्टि की। ज्योति पिछले साल 23 मार्च को पाकिस्तान के नेशनल डे पर वहां की एंबेसी में इफ्तार पार्टी में शामिल हुई थी। उसने अपने चैनल पर इसका वीडियो डाला था। एंबेसी में पाकिस्तानी

दूतावास के एक अफसर दानिश ने बहुत फ्रेंडली तरीके से उसका वेलकम किया। वीडियो में दोनों आपस में इस तरह से बात करते दिखे जैसे एक-दूसरे को बहुत करीब से जानते हों। इसी दानिश को ऑपरेशन सिंदूर के बाद अवांछित व्यक्ति घोषित किया गया था। भारत सरकार ने उसे 13 मई को देश से निकाल दिया था। पार्टी में दानिश ने उसे अपनी पत्नी से मिलवाया। इसके अलावा वहां मौजूद अधिकारियों से भी उसकी बात कराई। इस इफ्तार में ज्योति चीनी अधिकारियों से भी मिली।

खुफिया एजेंसियों की वजह से मिलता वीआईपी ट्रीटमेंट

हरियाणा के हिसार से जासूसी के शक में पकड़ी गई यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान में वीआईपी ट्रीटमेंट मिलता था। ऐसा पाक एंबेसी के अधिकारी दानिश और पाकिस्तानी खुफिया अधिकारियों के ज्योति के कॉन्टैक्ट की वजह से होता था। उसका जहां जाने का मन होता था, वहां चली जाती थी। हिसार पुलिस की पूछताछ में उसने यह बातें कबूल की हैं। आमतौर पर किसी भारतीय के पाकिस्तान जाने पर पुलिस के स्तर पर उसकी निगरानी की जाती है। वह उन्हीं जगहों पर जा सकता है, जिसका जिक्र वीजा में होता है। लेकिन, ज्योति पाकिस्तान में हाईप्रोफाइल पार्टियों में भी शामिल होती थी।

एम्स भोपाल द्वारा फार्माकोविजिलेंस एवं टीबी उपचार पर जागरूकता अभियान का आयोजन

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में फार्माकोलॉजी विभाग ने कम्युनिटी मेडिसिन विभाग के सहयोग से बकानिया (भोपाल) स्थित आंगनवाड़ी केंद्र में फार्माकोविजिलेंस और क्षय रोग (टीबी) की डॉट थेरेपी के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु एक जागरूकता अभियान आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य समुदाय को यह समझाना था कि फार्माकोविजिलेंस, यानी औषधियों के दुष्प्रभावों की निगरानी, दवाओं के सुरक्षित और प्रभावी उपयोग के लिए अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, इस अभियान के माध्यम से टीबी के मरीजों को डॉट थेरेपी का पूरा कोर्स करने के लिए प्रेरित किया गया और उनके संदेहों का समाधान भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान संवादात्मक सत्रों और सहभागिता आधारित चर्चाओं के जरिए यह बताया गया कि दवाओं के दुष्प्रभावों की जानकारी देना क्यों जरूरी है और टीबी की दवाएं समय पर तथा पूरी तरह से लेना कितना महत्वपूर्ण है। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि डॉट थेरेपी का पालन न केवल मरीज के पूरी तरह ठीक होने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह दवा-प्रतिरोधी टीबी को रोकने, बीमारी के फैलाव को कम करने और समग्र जनस्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी अहम भूमिका निभाता है।

इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, ऐसे जागरूकता अभियान स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होते है। फार्माकोविजिलेंस और टीबी उपचार के प्रति सही जानकारी और सतर्कता ही स्वस्थ समाज की आधारशिला हैं। जब हम समुदाय को दवाओं के सही उपयोग तथा निगरानी की समझ देते हैं, तभी हम बीमारियों को प्रभावी ढंग से रोक सकते हैं और जनस्वास्थ्य को सुदृढ़ बना सकते हैं।

शराब ठेके का दूसरा गेट खुलने पर विरोध

रहवासियों ने कहा- लाइसेंस में एक ही मंजूरी, महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा का खतरा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बागसेवनिया इलाके में स्थित शराब की दुकान के गेट को लेकर रविवार दोपहर जमकर हंगामा हुआ। फॉरच्यून डिलाइट सोसाइटी के बाहर बड़ी संख्या में रहवासी इकट्ठा हुए और शराब दुकान के दूसरे गेट के खिलाफ प्रदर्शन किया।

रहवासियों का आरोप है कि शराब ठेके का एक गेट पहले से मेन रोड की ओर था, लेकिन अब ठेकेदार ने इसका दूसरा गेट भी रोड की दूसरी दिशा में खोल दिया है। इससे मोहल्ले के लोग खासतौर पर महिलाएं और बच्चे असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

एक ही गेट मंजूर, दूसरा खोलना अवैध

सोसाइटी की अध्यक्ष विभा श्रीवास्तव ने बताया कि शराब दुकान के लिए जो लाइसेंस मिला है, वह पहले गेट के लिए ही जारी हुआ था। दूसरा गेट खोलना पूरी तरह से अवैध है। जिस तरफ दूसरी गेट खोली गई है। वहां पास ही में बाजार भी है। लोग अक्सर बाजार जाते रहते हैं। ऐसे में यह सुरक्षित नहीं है। वहीं लाइट नहीं होने से एक्सीडेंट का खतरा बढ़ जाता है।

स्थानीय निवासी ब्रजेश ने कहा कि जिस दिशा में दूसरा गेट खोला गया है, वहां स्ट्रीट लाइट तक नहीं है। इसके अलावा गली में कई गुमटियां लग गई हैं, जिससे यहां भीड़भाड़ बनी रहती है। इससे महिलाओं और बच्चों का निकलना मुश्किल हो गया है।

दूसरा गेट स्थायी रूप से बंद हो

रहवासियों ने मांग की है कि शराब दुकान को उसी ओर रखा जाए, जिस दिशा में यह पहले थी और दूसरा गेट हमेशा के लिए बंद किया जाए।

फिलहाल दबाव के बाद दुकान का दूसरा गेट बंद कर दिया गया है, लेकिन लोगों को आशंका है कि इसे फिर से खोला जा सकता है। यदि ठेकेदार ने दोबारा गेट खोला, तो रहवासी आगे की कार्रवाई करेंगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मध्यभारत प्रांत के शिक्षा वर्ग प्रारंभ

प्रान्त के 31 जिलों के 801 स्वयंसेवक ले रहे हैं प्रशिक्षण

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ, मध्यभारत प्रांत में स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण के लिए तीन संघ शिक्षा वर्गों आयोजित किये गए हैं। इनमें मध्य भारत प्रान्त के संघ रचना के 31 जिलों के 801 स्वयंसेवक शामिल हुए हैं। तरुण व्यवसायी कार्यकर्ताओं का वर्ग रायसेन, महाविद्यालयीन विद्यार्थी कार्यकर्ताओं का वर्ग सिरोज और 40 वर्ष से अधिक आयु के स्वयंसेवकों के लिए संघ शिक्षा वर्ग विशेष का आयोजन विदिशा में किया जा रहा है। संघ शिक्षा वर्ग में शामिल शिक्षार्थियों को शारीरिक, बौद्धिक, योग, सेवा, प्रबंधन और संघ कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त होगा। संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण का कार्य है। 15 दिन के इस वर्ग में युवा कठोर अनुशासित दिनचर्या का पालन करते हुए अपने व्यक्तित्व को मजबूत करेंगे। इस दौरान स्वयंसेवक मोबाइल फ़ोन से भी पूरी तरह दूर रहते हैं।

तीनों ही स्थानों पर संघ शिक्षा वर्ग 17 मई से प्रारंभ हो गए हैं, जिनका औपचारिक उद्घाटन 18 मई को किया गया। विदिशा के संघ शिक्षा वर्ग का उद्घाटन सर्वाधिकारी श्री हरिश्चंद्र शर्मा और मध्य भारत प्रांत के प्रांत प्रचारक श्री विमल गुप्ता ने भारत माता की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। वहीं, रायसेन में सर्वाधिकारी श्री अशोक कुशवाह, प्रान्त कार्यवाह श्री हेमन्त सेठिया एवं सह प्रान्त कार्यवाह श्री संतोष मीणा ने वर्ग का उद्घाटन किया। इसके साथ ही सिरोंज में महाविद्यालयीन विद्यार्थी संघ शिक्षा वर्ग का उद्घाटन वर्गाधिकारी श्री प्रहलाद सबनानी, वर्ग कार्यवाह श्री त्रिवेश लोधी, वर्ग पालक श्री सुरेन्द्र सिंह एवं प्रान्त सह कार्यवाह विजय दीक्षित ने किया।

समाज परिवर्तन का केंद्र बने शाखा : श्री गुप्ता

विदिशा में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए प्रान्त प्रचारक श्री विमल गुप्ता ने कहा कि हिंदू जीवन चार आश्रमों पर आधारित है। जिनमे चौथा आश्रम संन्यास आश्रम है, जो व्यक्ति को मोक्ष की राह पर ले जाता हैं। वर्ग में आए हुए हम सभी साधक हैं और अपनी साधना को सफल करने के लिए इस वर्ग में उपस्थित हुए हैं। उन्होंने कहा कि साधना कठिनता से सफल होती हैं। जो कठिनाइयों में जी नहीं सकता, वह कभी साधक नहीं बन सकता है। उन्होंने कहा कि हमे अपने जीवन में देश भक्ति वैराग्य हमेशा बनाकर रखना चाहिए। समाज में शाखा की भूमिका जागरण श्रेणी के माध्यम से स्पष्ट हो सके और शाखा समाज परिवर्तन का केंद्र बन सके इसलिए हम वर्ग में प्रशिक्षण लेने आए हैं। उन्होंने कहा कि वर्ग में स्वयंसेवकों को शाखा की सामाजिक भूमिका की संकल्पना की स्पष्टता, व्यवस्थापन का मूल तत्व (समय, व्यक्ति और कार्य) का प्रबंधन और संगठन की रीति-नीति का परिचय मिलेगा। उन्होंने स्वयंसेवकों को कहा कि वर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद हमारे जीवन में संघ संस्कार की अभिव्यक्ति का मानस बनाना चाहिए, समूह में काम करने का हमारा स्वभाव विकसित हो और संघ के वैचारिक अधिष्ठान हिंदुत्व, राष्ट्रीयता की स्पष्टता भी होनी चाहिए।

सामूहिक जीवन को समझने का अवसर है वर्ग : श्री मीणा

रायसेन में स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए प्रान्त सह कार्यवाह श्री संतोष मीणा ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से प्रतिवर्ष अपने कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन किया जाता है। संघ शिक्षा वर्ग में हमें मन की साधना, स्व-अनुशासन, त्यागपूर्ण जीवन, सामूहिक जीवन के सामंजस्य को सीखते हुए विविध प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करना है। यहाँ हमें सामूहिक जीवन को व्यापक संदर्भ में समझने का अवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि वर्ग में हमें स्वयं के लिए कठोर अनुशासन का पालन करना है और अपनी सुविधा से पहले सह-शिक्षार्थियों की सुविधा का ध्यान रखना है।

बौद्धिक क्षमता बढ़ाते हैं वर्ग : श्री दीक्षित

सिरोंज में प्रान्त सह कार्यवाह श्री विजय दीक्षित ने कहा कि संघ शिक्षा वर्ग में हम विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, जिससे हमें संघ कार्य की स्पष्ट मिलती है। शारीरिक दृष्टि से सक्षम होने के लिए तो जिम भी है, किन्तु बौद्धिक दृष्टि से सक्षम होने के लिए कोई जिम नहीं होती। ये वर्ग कार्यकर्ता की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक को सांस्कृतिक एवं सामाजिक योद्धा बनना पड़ेगा और उसके लिए भारत को जानो, भारत की मानो और भारत के बनो।

यह प्रशिक्षण लेंगे स्वयंसेवक

इन वर्गों में स्वयंसेवक शारीरिक, बौद्धिक, व्यवस्था, प्रबंधन, सेवा और संस्कार के साथ-साथ योग-व्यायाम, दंड संचालन, नियुद्ध एवं खेलों के माध्यम से ना केवल शरीर को सबल बनाएंगे अपितु मानसिक रूप से भी सबल होने का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। विदिशा के वर्ग में प्रान्त के 183 स्वयंसेवक, रायसेन में 235 एवं सिरोंज में आयोजित वर्ग में 383 कार्यकर्तृता प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। उल्लेखनीय है कि जिन स्वयंसेवकों ने पूर्व में 7 दिन के प्राथमिक वर्ग का प्रशिक्षण प्राप्त किया होता है और जो संघ के कार्य में सक्रिय रहते हैं, उनमें से ही चयनित कार्यकर्ताओं को संघ शिक्षा वर्गों में भेजा जाता है।

भोपाल में मौलाना गैंग का एक और सदस्य गिरफ्तार

आरोपी शरीफ बच्चा ने की थी फायरिंग, 12 दिन से था फरार

भोपाल (नप्र)। भोपाल की टीला जमालपुरा पुलिस ने जुबेर मौलाना गैंग के सदस्य शरीफ बच्चा को गिरफ्तार कर किया है। आरोपी ने इंद्रा नगर में रहने वाले बदमाश साद के साले फैसल पर 6 मई को फायरिंग की थी। इसके बाद से ही फरार चल रहा था। 12 मई को पुलिस ने आरोपी जुबेर मौलाना सहित केस के अन्य तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। आरोपी शरीफ ने जहां फायरिंग की थी, रविवार को उसका वहीं जुलूस निकाला गया।

घटना के बाद से था फरार- 6 मई को जुबेर मौलाना ने अपने 10-12 साथियों के साथ साद निवासी मंगलवारा के घर पहुंच कर साद समझ कर सैफ के ऊपर जान से मारने की नीयत से अवैध फायर आर्म्स से फायर किया। इसके बाद साद के साले फैसल जो कि इंद्रानगर थाना टीला जमालपुरा मे रहता है, उसके घर पर जुबेर मौलाना व उसके लगभग 10-12 साथियों ने आकर अवैध फायर आर्म्स से हवाई फायर किया। इस घटना के बाद इलाके में दहशत फैल गई थी।

ऐसे पकड़ा गया अपराधी शरीफ बच्चा- रविवार को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि इस्लामी गेट के पास बैरसिया बस स्टैण्ड पर जुबेर मौलाना का गुर्गा शरीफ उर्फ बच्चा भोपाल से भागने की फिराक में खड़ा है। जिस के बाद पुलिस ने आरोपी शरीफ को घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया।

नवाचार से गतिमान हुआ सहकारी आंदोलन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व और सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग के कुशल मार्गदर्शन में सहकारिता विभाग में नित नये नवाचार किये जा रहे हैं और नवाचार से गति पकड़ता जा रहा है मध्यप्रदेश सहकारी आंदोलन गतिमान हुआ है। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने भोपाल के राज्य स्तरीय सहकारी सम्मेलन में बताया कि राज्यों में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) के कम्प्यूटराइजेशन के कार्य में मध्यप्रदेश देश में प्रथम रहा। उन्होंने शत-प्रतिशत उपलब्धि के लिये प्रदेश की सराहना की।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के लिये लगभग हर माह सहकारिता संबंधी आयोजन करने का संकल्प लेकर काम किया जा रहा है। इसमें अधिकारियों-कर्मचारियों के आचरण और व्यवहार की ऑनलाइन ट्रेनिंग करवायी जा रही है। नवाचार और अच्छा कार्य करने वालों को साल के अंत में उत्कृष्ट कर्मी के रूप में सम्मानित भी किया जायेगा। सहकारी आंदोलन को मजबूत करने के लिये मध्यप्रदेश की हर पंचायत पर पैक्स स्थापित किये जायेंगे। सहकारिता के महत्व के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिये विभाग के तहत सभी स्तर के विभागीय कार्यालय, सहकारी संस्थाओं में स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता'' अभियान के तहत स्वच्छता दिवस कार्यक्रम मनाया गया।

नई दिल्ली के इण्डिया हेबिटेड सेंटर में आयोजित 100वें राष्ट्रीय स्कॉच समिट में मध्यप्रदेश के सहकारिता विभाग के राज्य सहकारी विपणन संघ (मार्कफेड) को उनके फर्टिलाइजर सप्लाई चैन ऑटोमेशन प्रोजेक्ट आईएफएसएस को प्रतिष्ठित स्कॉच अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में को-ऑपरेटिव पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (सीपीपीपी) के तहत सहकारिता क्षेत्र में कुल 2305 करोड़ राशि में 19 एमओयू हुए। यह एक क्रांतिकारी पहल है, जब नये सीपीपीपी मॉडल के तहत इतने एमओयू सहकारिता क्षेत्र में हुए।

विभाग की गतिविधियों पर निरन्तर ध्यान दिया जा रहा है। सहकारिता विभाग में 25 कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकम्पा नियुक्ति दी गयी। अब विभाग में अनुकम्पा नियुक्ति का एक भी प्रकरण लंबित नहीं है। इसी प्रकार अपेक्स बैंक एवं जिला सहकारी बैंकों में आईबीपीएस से भर्ती प्रक्रिया की जा रही है। अपेक्स बैंक में 47 अधिकारियों की भर्ती प्रक्रिया पूर्ण हुई है और 197 की भर्ती प्रक्रियाधीन है। जिला सहकारी बैंकों में 1099 समिति प्रबंधक और 1568 बैंकिंग सहायक की भर्ती प्रक्रिया पूर्ण की गयी है और 2675 पदों पर भर्ती की अनुमति प्राप्त कर ली गयी है।

मध्यप्रदेश में भारत सरकार से प्राप्त मॉडल बायलॉज सभी पैक्स में लागू कर पैक्स को बहुउद्देश्यीय बनाया गया है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में एम-पैक्स की स्थापना की जा रही है। प्रथम चरण में 637 नये एम-पैक्स के गठन की कार्यवाही शुरू है। प्रदेश में ग्रामीण स्तर पर बैंकिंग सुविधा आमजन को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों की 773 शाखाओं और उनसे संबद्ध 4000 पैक्स संस्थाओं द्वारा लगभग 4800 माइक्रो एटीएम का संचालन किया जा रहा है। माइक्रो एटीएम के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में सरल एवं शीघ्र लेन-देन की बैंकिंग सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं।

मध्यप्रदेश सरकार किसानों को उन्नत बीज उपलब्ध कराने की दिशा में भी काम कर रही है। बीज संघ को उन्नत स्तर पर पहुँचाने का प्रयास जारी है। बीज संघ से चीता बीज के नाम से नया ब्रॉण्ड लांच किया जा रहा है। पैक्स के माध्यम से चीता बीज का वितरण किया जायेगा। अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष में मध्यप्रदेश ने भी कैलेण्डर बनाकर सहकारी आंदोलन के माध्यम से लोगों को जोड़ने और पारदर्शिता लाने का काम किया है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के माध्यम से सेवाओं की पूर्ति पर भी काम किया जा रहा है। गाँव की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर 3 शीर्ष स्तर की संस्थाएँ बनायी गयी हैं। इससे सहकारी आंदोलन सशक्त हुआ है।

भारत सरकार द्वारा देश की सभी सहकारी संस्थाओं की जानकारी राष्ट्रीय सहकारी डेटाबेस (एनसीडी) पोर्टल पर अपलोड करायी जा रही है। मध्यप्रदेश की सभी सहकारी संस्थाओं की एन्ट्री पोर्टल पर कर दी गयी है।

मध्यप्रदेश, भारत सरकार की सहकारिता की गतिविधियों में लगातार कदम से कदम मिलाकर सहकारिता आंदोलन को गति देने का काम कर रहा है। आने वाले समय में मध्यप्रदेश सहकारिता के कई आयामों में अग्रणी होगा।

भोपाल में पेड़ काटा तो थाने पहुंच गए बच्चे

बाग मुगालिया में अज्ञात पर केस दर्ज करने की मांग; बोले-सीसीटीवी कैमरों की मदद से पकड़ें

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक पेड़ के काटे जाने के विरोध में रहवासी बच्चों के साथ थाने पहुंच गए। मामला बाग मुगालिया एक्सटेंशन कॉलोनी का है। यहां करीब 20 फीट ऊंचे और 4 साल पुराने पेड़ को अज्ञात व्यक्ति ने काट दिया। इस पर नाराज लोगों ने थाने पहुंचकर आपराधिक केस दर्ज किए जाने की मांग की। कहा कि आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से पेड़ काटने वाले को पकड़ा जाए।

लोगों ने हमीरपुर में पेड़ को टक्कर मारने पर ट्रक चालक के विरुद्ध केस होने के मामले का भी हवाला दिया। बाग मुगालिया एक्सटेंशन कॉलोनी विकास समिति के अध्यक्ष उमाशंकर तिवारी ने बताया, कॉलोनी के एचआईजी 257 के सामने एवं नवनिर्मित स्कूल की बाउंड्री के बगल में 12 जून 2021 को एक पीपल का पेड़ लगाया गया था, जो अब 20 फीट तक बड़ा हो गया था। इस पेड़ को दो दिन पहले जड़ से काट दिया गया है। जिससे गहरा आघात लगा है। यह पेड़ की हत्या प्रतीत होता है। सुप्रीम कोर्ट ने भी पेड़ों की कटाई मानव हत्या से बड़ा अपराध बताया है।

हमीरपुर में हो चुका केस, इसलिए यहां भी करें- तिवारी ने बताया कि हमीरपुर में भी पेड़ को टक्कर मारने पर ट्रक के ऊपर मामला दर्ज किया गया जा चुका है। उक्त प्रकरण में भी अज्ञात पर हत्या का प्रकरण दर्ज हो और फिर उसे ढूंढा जाए। जांच कर इस प्रकार की कार्रवाई की जाए, जैसे किसी व्यक्ति की हत्या के बाद की जाती है, क्योंकि आने वाले समय में हमें जिंदा रहने के लिए पेड़ों को बचाना बहुत जरूरी है।

जो पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, वही पेड़ ऐसे काट दिए जाएंगे तो मानव जीवन, पशु-पक्षी का जीवन संकट में आएगा। जिसके अंदर ऑक्सीजन है। वह जीवित माना जाता है तो फिर पेड़ जो मनुष्य को ऑक्सीजन दे रहे हैं उसे काटने वाला भी बड़ा अपराधी है।

केस दर्ज नहीं हुआ तो जनसुनवाई में जाएंगे- अध्यक्ष तिवारी के अनुसार, फिलहाल भोपाल के कटारा थाने पहुंचकर हत्या का मामला दर्ज करने के लिए आवेदन दिया है। यदि केस दर्ज नहीं होता है तो मंगलवार को पुलिस कमिश्नर, कलेक्टर के पास भी पहुंचेंगे और मांग करेंगे।

टीबी इलाज में सही दवा और पूरा कोर्स जरूरी

भोपाल के बकानिया में चलाया दवाओं के दुष्प्रभावों पर निगरानी अभियान

भोपाल (नप्र)। भोपाल। सिर्फ दवा खाने से बीमारी ठीक नहीं होती, उसे सही तरीके से, समय पर और पूरा कोर्स लेना बेहद जरूरी है। यह बात एम्स भोपाल के विशेषज्ञों ने शहर के बकानिया स्थित आंगनवाड़ी केंद्र में फार्माकोविजिलेंस (दवाओं के दुष्प्रभावों की निगरानी) अभियान के दौरान कही।

इस दौरान मौजूद लोगों को टीबी के इलाज और उसके महत्व के बारे में भी जागरूक किया गया। एम्स के निदेशक डॉ. अजय सिंह के मुताबिक यह कार्यक्रम खासकर स्थानीय महिलाओं के लिए आयोजित किया गया था, जिसे फार्माकोलॉजी विभाग और सामुदायिक चिकित्सा विभाग ने मिलकर संचालित किया।फार्माकोविजिलेंस अभियान में एम्स ने टीबी इलाज में दवाओं के सही उपयोग पर जोर दिया।

विशेषज्ञों ने बताया कि दवाओं के दुष्प्रभावों को समय पर रिपोर्ट करना और टीबी मरीजों पर डीओटी (डायरेक्टली ऑब्जर्व्ड ट्रीटमेंट) थेरेपी के असर का रिकॉर्ड रखना जरूरी है। डॉ. रोमा रस्तोगी ने कहा कि टीबी की तरह ही सर्वाइकल और ब्रेस्ट कैंसर की भी समय पर जांच और इलाज आवश्यक है। वहीं, डॉ. मोनालिसा दत्ता ने बताया कि दवाओं के साइड इफेक्ट्स को नजरअंदाज करने से बड़ी जटिलताएं हो सकती हैं।

डीओटी थेरेपी क्यों है जरूरी?

कार्यक्रम में बताया गया कि अगर टीबी मरीज बीच में दवा लेना छोड़ देता है, तो उसका इलाज अधूरा रह जाता है और दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता (ड्रग रेजिस्टेंस) विकसित हो सकती है। इससे इलाज कठिन हो जाता है और संक्रमण दूसरों तक भी फैल सकता है।

रेलवे टिकट पर ऑपरेशन-सिंदूर का प्रचार, मोदी का फोटो

कांग्रेस बोली- सेना के पराक्रम को प्रोडक्ट जैसे बेच रहे; रेलवे ने कहा- ये सिर्फ संदेश

भोपाल (नप्र)। रेलवे रिजर्वेशन टिकट पर पीएम मोदी की फोटो के साथ ऑपरेशन सिंदूर का संदेश छापा गया है। इसे लेकर कांग्रेस ने आपत्ति जताई है। कांग्रेस ने कहा कि मोदी सरकार किस क़दर विज्ञापनजीवी है इसका उदाहरण देखिए कि रेलवे टिकट पर ऑपरेशन सिंदूर को मोदी के विज्ञापन के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है।

ये सेना के पराक्रम को भी प्रोडक्ट की तरह बेच रहे हैं। इनसे देशभक्ति नहीं सौदेबाज़ी ही हो सकती है। वहीं इस मामले पर रेलवे ने कहा है कि ये विज्ञापन नहीं, सिर्फ एक संदेश है। भाजपा ने कहा कि कांग्रेस सेना के शौर्य का अपमान कर रही है।

ये लिखा है टिकट पर- टिकट पर लिखा है- ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में एक नई लकीर खींच दी है। एक नया पैमाना, न्यू नॉर्मल तय कर

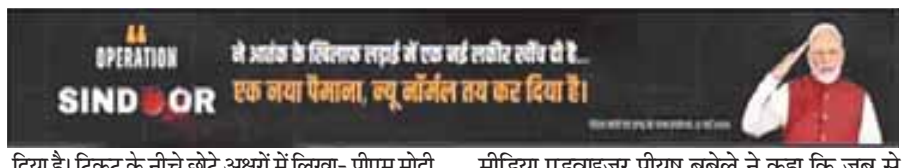

दिया है। टिकट के नीचे छोटे अक्षरों में लिखा- पीएम मोदी का राष्ट्र के नाम संबोधन 12 मई 2025।

बता दें कि पाकिस्तान के साथ सीजफायर के 51 घंटे बाद पीएम मोदी ने सोमवार रात 8 बजे देश को संबोधित किया था। अपने 22 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री ने पहलगाम हमला, ऑपरेशन सिंदूर, सीजफायर, आतंकवाद, सिंधु जल समझौते और पीओके पर बात की थी।

कांग्रेस का आरोप- सेना के अभियान को प्रचार सामग्री बनाया- पूर्व सीएम कमलनाथ के मीडिया एडवाइजर पीयूष बबेले ने कहा कि जब से भारत की सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से पाकिस्तान के दांत खट्टे किए हैं, तब से भाजपा की कोशिश यही है कि सेना के पराक्रम और वीर सैनिकों की बहादुरी को चुनावी राजनीति के लिए कैसे भुनाया जाए। भारत में हमेशा से एक स्वस्थ परंपरा रही है कि सेना को राजनीतिक बहस से दूर रखा जाता है। लेकिन भाजपा इस परंपरा को तोड़ते हुए सेना के अभियान को भी प्रचार सामग्री बना रही है।

आईआरसीटीसी ने कहा- ये विज्ञापन नहीं

इस मामले में आईआरसीटीसी के पीआरओ वीके भट्टी ने कहा कि ये विज्ञापन नहीं, सिर्फ एक संदेश है। भोपाल में आईआरसीटीसी के ज्वाइंट मैनेजर टूरिज्म राजेंद्र बोरवन से भी इस मामले में संपर्क किया गया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। भोपाल रेल मंडल के डीआरएम देवाशीष त्रिपाठी ने भी मामले में कुछ भी कहने से इनकार कर दिया है।

भाजपा ने कहा- कांग्रेस के पेट में दर्द क्यों?

भाजपा प्रवक्ता सत्येंद्र जैन चौधरी ने कहा- कांग्रेस हमारे सेना के शौर्य का अपमान कर रही है। ऑपरेशन सिंदूर हमारी माता-बहनों के सिंदूर उजाड़ने का प्रतिशोध था। सेना ने 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया गया। यह न्यू नॉर्मल है। यह डिफेंस सिस्टम की विजय है। कांग्रेस को इससे दुख हो रहा है। राहुल गांधी तो कहते रहे हैं कि भारतीय सेना चीन की सेना से पिट जाती है। कांग्रेस के पेट में दर्द होना स्वाभाविक है।

संपादकीय

न्यूज चैनल ही जिम्मेदार

बीते एक पखवाड़े में भारत और पाकिस्तान के बीच छिड़े अघोषित युद्ध की खबरें और कवरेज भी यदि भारतीय टीवी दर्शकों को नहीं लुभा सकीं और वो भारतीय सेना के पराक्रम से ज्यादा यदि आईपीएल में मनोरंजन खोजते रहे तो इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार भारतीय टीवी न्यूज चैनल ही हैं। इसी संदर्भ में बार्क इंडिया के ताजा आंकड़े न सिर्फ चौंकाने वाले हैं बल्कि चैनलों को आत्मनिरीक्षण पर विवश करने वाले हैं। दोनों देशों के बीच भारी तनाव के बीच भी समाचार चैनलों की दर्शक संख्या में खास इजाफा नहीं हुआ। 7 और 8 मई की रात हुए ऐतिहासिक ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी स्टार स्पोर्ट्स 1 हिंदी को रात 8:30 से 9:30 के प्राइम टाइम के दर्मियान 9345 एएमए (एवरेज पर मिनट स्पेक्टेटर) मिले, जबकि पूरे हिंदी न्यूज जोनर को सिर्फ 4834 एएमए ही मिले यानी कि आधे से भी कम। हालांकि 8 मई को भारत पाक के बीच सशस्त्र संघर्ष के बाद धर्मशाला में हो रहा आईपीएल मैच बीच में ही रोकना पड़ा था। बावजूद इसके आईपीएल की व्यूअरशिप में गिरावट नहीं आई। इतना ही नहीं आईपीएल स्थगित होने के बाद भी हिंदी न्यूज चैनलों से दोगुने दर्शक आईपीएल के पुराने मैचों को देख रहे थे। इसी तरह जब ऑपरेशन सिंदूर की जानकारी दे रही दो महिला सेनाधिकारी और विदेश सचिव की पत्रकारवार्ता को भी आईपीएल से कम दर्शक मिले। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारतीय न्यूज चैनल और खासकर हिंदी चैनलों ने आतंकियों और समुदाय विशेष के खिलाफ जिस तरह का अभियान चलाया था, उसे देख देखकर दर्शक ऊब चुके थे। लगता है कि अब मीडिया के जरिए सच्ची और निष्पक्ष खबरें देने का जमाना लद चुका है। हर खबर को मिर्च मसाले के साथ और अपने राजनीतिक आकाओं की विरूदावली पढ़ने के रूप में पेश किया जाने लगा। कई सच्ची झूठी खबरें प्लांट कर दर्शकों को गले उतारने की कोशिश की गई। इस युद्ध में चीनी हथियारों की भी पोल खुल है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि चीन इसमें और सुधार नहीं करेगा। बेशक हमने पहलगाम के चैलेंज को स्वीकार करते हुए पाकिस्तान को करारा जवाब दिया, लेकिन भविष्य इससे भी ज्यादा चुनौती भरा होने वाला है। तब भारत क्या करेगा या फिर उसे अभी से क्या करना चाहिए, यह बताने वाले न्यूज चैनल लगभग नदारद थे। वो भूल रहे थे कि जनता को बहुत दिनों तक मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। युद्ध और पाकिस्तान को लेकर शुरू में जिस तरह कवरेज न्यूज चैनलों ने किया, वह फिर भी ठीक था, लेकिन बाद में इतना इकतरफा हो गया कि लोगों को बोरियत महसूस होने लगी। ऐसा कवरेज सरकार को भले सुहा रहा हो, लेकिन आम पब्लिक का विश्वास उस पर डोलने लगा। यह बार्क के सर्वेक्षण से पुष्ट होता है। अब यहां सवाल है कि आखिर ऐसी क्या वजह थी कि लोग पाकिस्तान पर भारत की कार्रवाई का फालोअप नहीं जानना चाहते थे, इस पूरे घटनाक्रम का फलितार्थ क्या है, यह जानने में उनकी रूचि क्यों नहीं थी? क्या भारतीय दर्शकों में देशभक्ति की कोई कमी है या फिर जिस तरह से समाचार परोसे जा रहे थे, वह अपने आप में अतिरंजित और अविश्वसनीय ज्यादा था। बेशक टीवी न्यूज चैनलों में राष्ट्र प्रेम होना ही चाहिए, लेकिन कोई भी समाचार देते वक्त उसके सभी पहलुओं पर भी गौर करना चाहिए। लेकिन टीवी न्यूज चैनल अपनी हदों को लांघ गए। अफसोस की बात है कि दुष्प्रचार के मामले में पाकिस्तानी टीवी न्यूज चैनल भारतीय चैनलों से कहीं आगे रहे। प्रोपेगेंडा वार में पिछड़ने के कारण भी इस समूचे संघर्ष में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अकेला पड़ गया। यह कड़वी और गंभीर सच्चाई है।

युद्ध में सेना जीती, राजनीति हारी

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

जैसा कि अनुमान था कि भारत पाकिस्तान के बीच का अघोषित युद्ध कुछ ही दिनों में बंद हो जायेगा, यद्यपि यह भारत की जनता की इच्छा नहीं थी, और न ही किसी भी समझदार व्यक्ति की। क्योंकि आजादी के बाद से लगातार देश पाकिस्तानी सीमा से तनाव-हिंसा और युद्ध झेलता रहा है। इसलिए इस बार लोगों की यह इच्छा थी कि भारत पाकिस्तान के बीच इस संघर्ष का स्थाई हल निकल जाये। इसका मौका भी पाकिस्तान ने स्वयं दिया था जब उसने पहलगाम में 26 निर्दोष पर्यटकों को आतंकवाद का शिकार बनाया। यह आतंकवादी पाकिस्तान की सेना के ही अघोषित अंग जैसे थे और उसके कई प्रमाण भी मिले। पहलगाम में जो हथियार या गोली बगैरा मिले थे वे भी पाकिस्तानी सेना के थे। भारत के द्वारा प्रत्युत्तर दिए जाने के बाद जो आतंकवादियों के ठिकाने तबाह हुए और जो आतंकवादी मारे गए वे भी पाकिस्तानी सेना के ही थे। क्योंकि पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों के द्वारा उनके दफ्नाने और सेना की सैल्यूट के जो फोटोग्राफ स्वतः पाक सेना ने जारी किए थे, उन्हें सारी दुनिया ने देखा है।

पाकिस्तान का पहलगाम आतंकी हमले में हाथ होने का यह स्पष्ट प्रमाण था जिसे झुठलाने की कोई जुर्रत पाकिस्तान नहीं कर सकता। सलिए जब पाकिस्तान ने सुरक्षा परिषद की समिति की बैठक में इस मामले को उठाया तो सुरक्षा परिषद की समिति के सदस्यों को वह संतुष्ट नहीं कर सका और समिति ने कोई प्रस्ताव नहीं किया।

दुनिया के दो छोटे-छोटे देशों ने, जिसमें तुर्किए व एक अन्य देश ने ही पाकिस्तान का समर्थन किया। बाकी पूरी दुनिया ने पाकिस्तान को अपराधी माना और भारत का समर्थन किया। सुरक्षा परिषद की समिति में पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी। दुनिया के तमाम शक्तिशाली देशों ने भारत के पक्ष में समर्थन किया और पाकिस्तान की आलोचना की। यह एक प्रकार से भारत के द्वारा की गई आक्रामक प्रतिक्रिया का समर्थन था। यहां तक कि दुनिया के इस्लामी देशों के संगठन ने भी पाकिस्तान का समर्थन नहीं किया। और एक प्रकार से भारत के पक्ष का ही समर्थन किया। इतना बड़ा विश्व जनमत इससे पहले कभी भी भारत के साथ नहीं था। इसलिए देश को उम्मीद थी कि भारत इस बार निर्णायक हल करेगा और सत्तर वर्ष पुरानी त्रुटि में सुधार कर पाक अधिकृत कश्मीर को वापस लेगा। यह इसलिए भी जरूरी था क्योंकि आतंकवादियों का प्रवेश द्वार पीओके ही है तथा भारत की सीमा से सटे होने की वजह से पाकिस्तान इसका इस्तेमाल एक आधार के रूप में करता है। लोगों को इस बार इसलिए भी निर्णायक हल की उम्मीद थी क्योंकि लोगों में यह जुमला चलता था कि मोदी है तो मुमकिन है। श्री नरेन्द्र मोदी भी जिस प्रकार पिछले तीन दशकों से आतंकवाद, पीओके, कश्मीर समस्या पाकिस्तान को लेकर पूर्ववर्ती सरकारों को कोसते रहे हैं, जो कि उचित भी था, इसलिए लोगों को उम्मीद थी कि इस बार श्री नरेन्द्र मोदी अवश्य कुछ निर्णायक कदम उठायेंगे।

घटना के बाद जिस तत्परता से श्री नरेन्द्र मोदी ने बैठकें कीं और गोली के बदले गोला जैसे जुमले फेंके उससे देश बहुत आशान्वित था। परंतु जिस प्रकार अचानक दस मई की शाम को भारत के डीजीएमओ की पाकिस्तान के डीजीएमओ से फोन पर बात हुई और युद्ध विराम का निर्णय हुआ वो न केवल लोगों को आश्चर्यजनक या उम्मीद के परे था, बल्कि श्री नरेन्द्र मोदी की बहादुरी के प्रति निराशा पैदा करने वाला था।

रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह तो विभाग सम्हालने के बाद से ही यह जुमला बोलते रहे हैं कि मैंने सेना को खुली छूट दे दी है। पहली गोली हम नहीं चलायेंगे। लेकिन यदि पहली गोली दुश्मन की ओर से चलती है तो उसका कड़ा जवाब देंगे।

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद श्री मोदी विदेश के दौरे को रद्द कर भारत आये तो उन्होंने भी यही बयान दिया कि हमने सेना को कह दिया है कि कब कहां कैसे करना है यह उसको तय करना है। इसका मतलब है कि इसके पहले सेना को आतंकवादी हमलों का प्रतिकार करने की छूट नहीं थी और पिछले दस वर्षों से रक्षामंत्री जी सेना को गुमराह कर रहे थे। उन्होंने सेना के बंधे हाथ खोले नहीं थे और बंधे हाथ तो पांच मई को श्री नरेन्द्र मोदी ने खोले हैं। यह लोकतांत्रिक परम्परा थी कि प्रधानमंत्री सारे घटनाक्रम को राष्ट्रपति जी को ब्रीफ करते, सर्वदलीय समिति की जो बैठकें बुलाई गयीं उनमें शामिल होते और देश के नाम संदेश जारी कर तथ्यों को रखते। परंतु फिर एक बार प्रधानमंत्री ने यह बताने का प्रयास किया है कि जनतंत्र और जनतांत्रिक परम्परायें, संविधान और संवैधानिक परम्परायें उनके लिए कोई मायने नहीं रखतीं। सर्वदलीय बैठक में दिल्ली में रहते हुए भी प्रधानमंत्री का शामिल न होना क्या जनतंत्र का मजाक उड़ाना नहीं है?

प्रधानमंत्री और उनका एनडीए मात्र 42 प्रतिशत मतों का प्रतिनिधित्व करता है। 58 प्रतिशत उनके और एनडीए के पक्ष में नहीं है। परंतु देश के संसदीय विपक्ष ने और छोटी बड़ी सभी पार्टियों ने बिना शर्त आवश्यक कार्रवाई करने के लिए भारत सरकार और सेना का समर्थन किया। सारी दुनिया में भारत की एकजुटता का संदेश गया। जबकि पाकिस्तान दुनिया में विभाजित नजर आया। यह एक बड़ी जनतांत्रिक उपलब्धि थी। इसके बाद भी प्रधानमंत्री ने देश की संवैधानिक परम्परा और प्रतिपक्ष का सम्मान नहीं किया। वे भूल गए कि जिन श्रीमती इन्दिरा गांधी को वे और उनकी मातृसंस्थायें तानाशाह कहती हैं उन्होंने भी 1971 में सारे विपक्ष को साथ लेने का प्रयोग किया था। यहां तक कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीर्ष नेतृत्व से भी सम्पर्क कर सहयोग मांगा था तथा जयप्रकाश जी को भारत का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए विश्व भ्रमण पर भेजा था। पाकिस्तान के डीजीएमओ और भारत के डीजीएमओ के बीच दस मई की शाम पांच बजे से ही युद्ध विराम हो गया। 12 मई को फिर एक बार टेलीफोन पर औपचारिक चर्चा हुई और सहमति हो गई।

इतनी घटनाओं के बाद कल 12 मई को प्रधानमंत्री ने पहली बार अपना मुंह खोला और देश के समक्ष कुछ बिंदु प्रस्तुत किये। हालांकि उनके आठ मुद्दों में कुछ भी नया नहीं है। बल्कि लगभग वही सब बातें हैं जो सरकारी पक्ष की ओर से पहले भी कही जाती रही थीं। युद्धविराम की घोषणा के समय और बाद में 12 मई को प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि अब अगर कोई हमले की घटना होगी तो उसे युद्ध माना जायेगा। अभी तक विधिवत युद्ध की घोषणा नहीं हुई थी। जो हो रहा था वह अघोषित युद्ध था। यह भी आश्चर्यजनक था कि दस मई के युद्धविराम की घोषणा के बाद तथा 12 मई को प्रधानमंत्री के उपदेशात्मक बयान के बाद भी पाकिस्तान की ओर से युद्धविराम का उल्लंघन हुआ है। दस मई को युद्धविराम के बाद भी रात में पाक सेना ने भारत की सीमा में हमले किये और 12 मई को भी मीडिया के अनुसार कुछेक स्थानों पर युद्धविराम का उल्लंघन हुआ। यह युद्धविराम वास्तव में युद्ध विराम है या युद्ध विश्राम है यह भविष्य के गर्भ में है।

प्राचीनकाल में सेनायें दिनभर लड़ती थीं, रात में विश्राम करती थीं, अगले दिन की लड़ाई की तैयारी के लिए। यह युद्ध विराम भी कहीं ऐसा ही तो नहीं है जो कुछ दिन के बाद फिर नये रूप रणनीति व ताकत के साथ शुरू हो। इस युद्धविराम के बाद एक और नई बहस शुरू हुई है। वह यह कि भारत ने युद्धविराम का फैसला स्वेच्छा से किया या अमेरिका जैसी विदेशी शक्ति के प्रभाव में। अमेरिका के बड़बोले राष्ट्रपति ने तो सार्वजनिक रूप से बयान दिया है कि उन्होंने रात भर भारत पाकिस्तान को समझाया। कुछ इस आशय की खबरें भी आईं कि अमेरिका ने भारत को व्यापार रोकने की धमकी दी। हालांकि भारत सरकार की ओर से इसका औपचारिक खंडन किया गया है। ट्रम्प व श्री मोदी के बीच कौन सच्चा कौन झूठा की बहस होगी तो एक भारतीय होने के नाते मैं श्री मोदी को सच्चा मानूंगा।

यह भी खबरें मीडिया में आई हैं कि पाकिस्तान ने परमाणु हमले की तैयारी की थी और उसकी सूचना के बाद भारत ने युद्धविराम का निर्णय किया। श्री मोदी के बयान से कि हमें परमाणु युद्ध की धमकी न दें ,भी इस सूचना की पुष्टि जैसी है। मैं नहीं जानता कि यह कितनी सही है। परंतु अगर यह सही है तो फिर भारत के राजनेताओं को यह भी मालूम होना चाहिए कि गांधी-लोहिया-और उनके अनुयायी के रूप मैं यह लिखता कहता रहा हूं कि परमाणु हथियार के बाद भारत पाकिस्तान बराबरी के मुकाबले में आ गये हैं। इसके पूर्व परम्परागत युद्धों में भारत लगातार जीता है, ताकतवर सिद्ध हुआ है।

श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री अटल बिहारी वाजपेई से श्री मोदी तक परमाणु परीक्षण को भारत की महान ताकत बताने वाले संघ को इसका उत्तर देना चाहिए। हालांकि अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष ने जिस प्रकार अचानक पाकिस्तान को युद्ध के बीच हजारों करोड़ का कर्ज मंजूर किया और आईएमएफ की मीटिंग में भारत अकेला अलग थलग रह गया। दुनिया के सभी सदस्य देशों ने कर्ज मंजूरी को स्वीकृति दी। क्या यह अंतरराष्ट्रीय दबाव बनने का कारण नजर नहीं आता? विश्व शक्तियां केवल अपने स्वार्थ या देश हित को ही लड़ती हैं किसी दूसरे को नहीं। जो प्रधानमंत्री दिन रात विश्वनेता-विश्वगुरु का खिताब लिए घूमते हैं उन्हें समझना चाहिए कि दुनिया के देश अपने राष्ट्रीय हितों से चलते हैं न कि दूसरे के। तारीफें तो व्यापार के सौदा पटाने की चीज रहती हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता।

हालांकि एक सच्चाई यह भी है कि देश इस बार श्री मोदी को सच्चा नहीं मान रहा। इसकी वजह भी है कि जब हमला करने का फैसला भारत सरकार के निर्णय के आधार पर हुआ तो युद्धविराम का फैसला डीजीएमओ कैसे कर सकता है? पाकिस्तान के लिए तो यह माना भी जा सकता है क्योंकि वहां सेना का नियंत्रण है। परंतु भारत में तो सारे निर्णय राजसत्ता ही करती है। यह बात किसी के गले नहीं उतर रही कि भारत सरकार और प्रधानमंत्री की सहमति के बगैर भारत के डीजीएमओ केवल एक पाकिस्तान के समकक्ष अधिकारी के फोन पर युद्धविराम तय करे। देश के आम लोगों में यह शक है कि भारत सरकार और प्रधानमंत्री ने अपनी नाक ऊंची दिखाने के लिए यह रास्ता निकाला कि पाक सैन्य अधिकारी फोन करें और भारत का सैन्य अधिकारी उसे मान ले।

अगर यह सैन्य अधिकारी का निर्णय है फिर तो यह भारत की राजनीतिक सत्ता के विरुद्ध विद्रोह जैसा होगा। प्रधानमंत्री जी को देश को यह बताना चाहिए कि यह युद्धविराम क्यों स्वीकार किया गया। क्या भारत का लक्ष्य पीओके को वापस लेना नहीं है? वो कौनसे कारण हैं जिनके चलते यह युद्धविराम स्वीकार किया, जबकि सरकार के मुताबिक और भारतीय मीडिया के मुताबिक भारत इकतरफा जीत रहा था। यहां तक कि मीडिया के एक बड़े हिस्से के द्वारा तो यह भी बताया जा रहा था कि पाकिस्तान कांप रहा है, वहां की सेना का मुखिया छिप गया है, वहां के सांसद रो रहे हैं, वहां के प्रधानमंत्री घबड़ा रहे हैं, पाकिस्तान प्यासा मरने वाला है आदि आदि। मैं मान लेता हूं कि भारत का योग्य और ईमानदार मीडिया यह खबरें सच ही दे रहा था तो उस मीडिया को बताना चाहिए कि एक सप्ताह के संघर्ष व युद्ध से भारत को क्या हासिल हुआ। पाकिस्तान के सौ लोग मरे। भारत के चालीस जवान शहीद हुए। या 26 हत्याओं का बदला सौ को मारकर लिया। ये सब खबरें उत्साह व युद्धकाल की हो सकती हैं परंतु इनसे कोई निर्णायक हल नहीं निकलता।

भारत की सेना ने अपने गौरवमय इतिहास को कायम रखते हुए फिर एक बार निर्णायक युद्ध की ओर कदम बढ़ाया था पर भारत के कमजोर राजनीतिक नेतृत्व, असफल कूटनीति, अदूरदर्शी विदेश नीति, व्यक्तिवाद ने जीते हुए देश व सेना को उसी प्रकार की पराजय की ओर ढकेल दिया है जैसा नेहरू जी के जीवनकाल में यूएनओ को प्रस्ताव देकर दिया गया था। 1965 में ताशकंद में समझौता स्व लालबहादुर शास्त्री जी ने किया था, 1971 में स्व श्रीमति इंदिरा गांधी जी ने शिमला समझौता किया था व स्व अटलजी के कार्यकाल में संसद पर हमले के बाद आर-पार के जुमले का हश्र हुआ था। वही अब श्री मोदी के कार्यकाल में गोली बनाम गोला का हश्र हुआ है।

सेना जीतती है और राजनीति हारती है। यह भारत की कूटनीति और विदेश नीति की हार है जिसे देश निरंतर झेलने को अभिशप्त है।

राष्ट्रप्रेम

कुमार अरुण

(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

अजीत डोभाल-राष्ट्रीय सुरक्षा के महानायक, जिनका दिल बेहद कोमल

'ऑपरेशन सिंदूर' का एक निहितार्थ यह भी है कि देश के राजनीतिक नेतृत्व के साहस, रणनीति, तकनीकी उन्नति, वैज्ञानिक मेधा और सैन्य बलों के अदम्य साहस के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के महानायक के रूप में उभरे। आठ दशक पार उम्र में किशोरों से गतिशीलता, तीक्ष्ण दूरदृष्टि और लगातार 18 घंटे काम करना उन्हें महामानव रूप में दर्शाता है। उनकी असली ऊर्जा है उदात्त राष्ट्रप्रेम। उनकी सांसों और दिल में हरदम राष्ट्र का गौरव धड़कता है। निस्संदेह, वे राष्ट्र के असली हीरो हैं।

मूल रूप से वे उत्तराखंड में गढ़वाल के रहने वाले हैं। पूरे गढ़वाल में लोग उन्हें एक महानायक के रूप में देखते हैं। भले ही हरदम राष्ट्रीय अभियानों में जुड़े श्री डोभाल कभी गढ़वाल में न रहे हों, लेकिन वे लोगों के दिलों में, विचारों में, आत्मगौरव में हैं और गीतों में हैं। वे यहां के लोगों को एक महानायक के रूप में सपने में दिखते हैं। गढ़वाल का सांस्कृतिक सामाजिक स्वरूप उनसे लोगों को जोड़ता है। लोग फख्र से कहते हैं वे हमारे इलाके हैं। पूरे देश में उत्तराखंड की सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाएं अपने हर कार्यक्रम में उन्हें मुख्य अतिथि बनाने को उतावली रहती है। लेकिन, डोभाल सार्वजनिक जीवन व मीडिया से सुरक्षित दूरी रखते हैं। कभी भी किसी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे पर शायद ही उन्हें कभी बयान देते हुए नहीं देखा गया। वैसे भी सुरक्षा से जुड़ी किसी भी संवेदनशील सूचना पर सार्वजनिक विमर्श राष्ट्रहित में नहीं है। यही वजह है कि वे नरेंद्र मोदी के खास विश्वासपात्रों में और उनका कार्यकाल देश के सबसे लंबे राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों में शुमार है।

उत्तराखंड के लोगों का डोभाल के प्रति सम्मोहन अस्वाभाविक नहीं है। एक तो पहाड़ों के लोग आम-तौर पर सहज-सरल और छल कपट से दूर रहते हैं। पहाड़ का परिवेश उन्हे मानवीय मूल्यों से जोड़ता है। उनके रिश्तों में कृत्रिमता कम होती है। हालांकि, समय के साथ स्थितियां बदल रही हैं। लेकिन, कमोबेश सभी पहाड़ों में लोगों की मनोदशा, आत्मीयता व प्रेम एक जैसा ही है। एक बात भारतीयों के मनोविज्ञान से भी जुड़ी है। डोभाल से यह अनुराग वैसा ही है, जैसे देश के लोग अमेरिका व यूरोप में भारतीय मेधा व राजनेताओं के उच्च पदों पर बैठने पर झूमते हैं। अंतरिक्ष में गई भारतीय प्रतिभाओं की सुरक्षा के लिए व्रत व हवन करते हैं। भले ही कभी वे हम से न मिल हों,दूर-दूर तक उनसे हमारा संपर्क न हो। हम कमला हैरिस की जीत के लिये हवन करते हैं, भले ही वह उप राष्टपति रहते हुए कभी भारत नहीं आई। चाहे कमला की सरकार की नीतियां कभी भी भारत के पक्ष में न रही हो। लेकिन, अजीत डोभाल के साथ ऐसा नहीं है। वे वहां के लोगों की सुध लेते हैं। उनके दुख-दर्द बांटते हैं।

यूं तो उनका सार्वजनिक जीवन सुरक्षा कारणों से बेहद गोपनीय रहता है। लेकिन, जब कभी अपने गांव की कुलदेवी की पूजा में शामिल हुए तो दूर-दूर के गांवों से लोग उन्हें देखने के लिए आते हैं। वे भी दिल खोलकर लोगों से मिलते हैं। गांव के गरीब लोगों की मदद करते हैं। पुराने लोगों का हाल पूछते हैं। उनका निजी जीवन राष्ट्रीय सुरक्षा व निजी सुरक्षा के कारण इतना गोपनीय रहा, कि जिस शहर में उनके सैन्य अधिकारी पिता गुणानंद डोभाल सेवानिवृत्ति के बाद रहते थे, उस शहर के अधिकांश लोगों को भी नहीं पता कि देश का यह महानायक उनके शहर का गौरव है। वे राष्ट्रीय मिशनों व विदेश प्रवास में लगातार ही बाहर रहे। उनके पिता,माता, बहन की स्मृतियां जरूर उस शहर में विद्यमान हैं। पिता बहुत सामाजिक सरोकारों के थे। सहज-सरल लंबे चौड़ी कद काठी के सब के सुख-दुख में शामिल होते थे। उनका आशीर्वाद लेखक को कई अवसरों पर मिला। अब उनके घर में कोई और व्यक्ति रहता है। लेकिन, अभी भी लोग उसे गर्व से अजीत डोभाल का घर कहते हैं।

अजीत डोभाल के व्यक्तिगत का सबसे बड़ा गुण यह है कि वे हर छोटे-बड़े व्यक्ति को सम्मान देते हैं। उनका भला करने की कोशिश करते हैं। वे कबीर की उस उक्ति को खारिज करते हैं, जिसमें कहा गया कि बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर। अजीत डोभाल के व्यक्तित्व का एक खास गुण है कि दूर की भी जान-पहचान या परिवार में यदि कोई प्रगति की दौड़ में पिछड़ गया, तो उसे संबल देते हैं। पर्ची-खर्ची की संस्कृति में भी उन्होंने कई प्रतिभाओं को राष्ट्रीय पटल पर चमकने का मौका दिया। योग्यता के बाद भी वे लोग कभी राष्ट्र के लिए योगदान न दे पाते। एक बार जिस होटल में वे ठहरे थे, वहां के बैरे से उन्होंने हाल-चाल पूछे और कहा कि किसी तरह की मदद की जरूरत हो तो बताओ। लोगों को वह दृश्य याद होगा जब कश्मीर में अनुच्छेद 370 के समाप्त होने के बाद कश्मीर घाटी के अशांत दौर में कुछ स्थानीय आम मुस्लिमों के साथ सड़क पर ठेले पर कुछ खाते नजर आए। वो फोटो देश के तमाम अखबारों में चर्चा का विषय बना था। कोई सहज व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है।

पिछले दिनों अजीत डोभाल के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे आरसी भटनागर ने लेखक को बताया कि जब उन्होंने किसी विषय पर अजीत डोभाल को पत्र लिखा तो उनका विस्तृत जवाब आया। उन्होंने यथा संभव सहयोग का वायदा किया। 1968 बैच के सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी अजीत डोभाल को ऑपरेशन के मामले में सबसे तेज कार्रवाई करने वाले खुफिया अधिकारी के रूप में जाना जाता है। मोदी सरकार में नॉर्थ ईस्ट तथा अब पाकिस्तान में जो सर्जिकल स्ट्राइक हुई है, उनका सूत्रधार डोभाल को माना जाता है। उन्हें खुफिया ऑपरेशन के मामले में भारत का सबसे सफल खुफिया अधिकारी माना जाता है। यही वजह है वे देश के पहले आईपीएस अधिकारी हैं, जिन्हें सेना के सर्वोच्च सम्मानों में से एक 'कीर्ति चक्र' दिया गया। उनकी हरफनमौला भूमिका के चलते आज भारतीय खुफिया तंत्र में उनका नाम सम्मान से लिया जाता है। प्रारंभिक शिक्षा अजमेर के सैनिक स्कूल में पूरी हुई। कालांतर में उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए किया, बाद में आईपीएस परीक्षा पास करने के बाद वर्ष 1968 में उन्हें केरल कैडर मिला। राष्ट्रवादी विचारधारा के रुझान वाले अजीत डोभाल इसके थिंक टैंक विवेकानंद फाउंडेशन के निदेशक भी रहे हैं। ऐसा लगता है राष्ट्र ने अजीत डोभाल के सुरक्षा सिद्धांत का अनुसरण तय कर लिया है। ऑपरेशन सिंदूर में उसकी झलक मिलती है। ओजपूर्ण भाषण में एक बार उन्होंने कहा था 'जिस दिन पाकिस्तान को इस बात का अहसास हो जाएगा कि भारत ने अपनी सुरक्षात्मक नीति बदलकर आक्रामक सुरक्षा नीति अपना ली है, उस दिन भारत पर अनावश्यक दबाव व हमले होने बंद हो जाएंगे। पाकिस्तान हम से ज्यादा नाजुक है। वे एक मुंबई कर सकते हैं तो हम एक बलूचिस्तान कर सकते हैं। यानी आंख के बदले आंख।' ये सोच है भारत के 'स्पाई मास्टर' कहे जाने वाले अजीत डोभाल की, जो भारत में सबसे ताकतवर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार माने जाते हैं, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली पसंद रहे हैं और सरकार बनने के बाद उनकी तुरंत नियुक्ति भी हुई।

काम ठहर जाए, तो समझो दफ्तर चालू

कटाक्ष

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सरकारी दफ्तर में कदम रखते ही ऐसा लगता है, मानो आपने समय-यंत्र (टाइम मशीन) से 1990 में छलांग लगा दी हो। दीवारों पर लटके कैलेंडर दशकों पुराने, और कर्मचारी साहब की मेज पर टेलीफोन वह तो संग्रहालय का गौरव बढ़ाने लायक। कर्मचारी कुर्सी पर तो विराजमान हैं, पर उनकी आत्मा किसी समानांतर ब्रह्मांड में तैर रही है। नजरें घड़ी पर अटकी हैं—5 बजे की आजादी का इंतजार, जैसे कोई कैदी सजा काट रहा हो। काम वह तो ऑफिस की दीवार पर टंगी प्रेरणादायक कहावतों जैसा है—हर कोई देखता है, कोई उस पर अमल नहीं करता। अगर कोई फाइल गलती से पास हो जाए, तो लोग चमत्कार मानकर जश्न मना लेते हैं।

कर्मचारी साहब की दिनचर्या अनुशासन की मिसाल है। सुबह 10 .30 बजे (या 11-11.30, क्योंकि ट्रैफिक तो जीवन का सच है) दफ्तर में भव्य प्रवेश। फिर चाय की चुस्की के साथ अखबार में क्रिकेट स्कोर और राजनीति की रसीली गपशप। दोपहर में लंच, जो एक घंटे की औपचारिकता से तीन घंटे का उत्सव बन जाता है। इसके बाद झपकी का पवित्र समय, और फिर शुरू होता है फाइलों का जादुई खेल—एक मेज से दूसरी मेज तक का सफर, बिना किसी परिणाम के। इस कला में वही माहिर, जो बिना कुछ किए सबसे व्यस्त नजर आए। दफ्तर नहीं, यह तो समय और कर्म का एक अनोखा तमाशा है। सरकारी दफ्तरों में फाइलें महज कागज का ढेर नहीं, बल्कि जीवंत किंवदंतियाँ हैं, जो दशकों तक मेजों के जंगल में भटकती रहती हैं। प्रत्येक फाइल एक महाकाव्य है, जिसकी गाथा रामायण और महाभारत को भी मात देती है। इन फाइलों को पास करवाना किसी युद्ध से कम नहीं। सबसे पहले, कर्मचारी साहब की कृपादृष्टि हासिल करनी पड़ती है। कुछ लोग चाय-पानी की जुगत भिड़ाते हैं, तो कुछ मिठाई के डिब्बों के साथ हाजिरी लगाते हैं। मगर साहब का दिल पत्थर-सा अडिग ! वे फाइल को ऐसे टटोलते हैं, मानो कोई पुरातत्वविद् मिस्र के पिरामिड में खजाना खोज रहा हो। सरकारी कर्मचारियों ने कामचोरी को न केवल कला, बल्कि एक जादुई विज्ञान का रूप दे दिया है। वे इतनी चतुराई से काम टालते हैं कि आप खुद को ही दोषी मानने लगते हैं। कोई काम जल्दी करने को कहें, तो जवाब आता है, 'सर, सिस्टम में गड़बड़ है !' यह 'सिस्टम' कोई ब्रह्मांडीय रहस्य है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं। कभी कंप्यूटर ने आत्मसमर्पण कर दिया, कभी इंटरनेट ने हड़ताल कर दी, तो कभी बिजली ने विदा ली। और अगर तकनीक ने बगावत न की, तो साहब की तबीयत जरूर जवाब दे देती है।

यह कहना कि सरकारी कर्मचारी कुछ करते ही नहीं, सरासर अन्याय होगा—वे ढेर सारा 'काम' करते हैं, बस वह आपके लिए शायद ही उपयोगी हो। वे मीटिंग्स में घंटों डूबे रहते हैं, जहां चाय और समोसों का उत्सव मना, मगर फैसले? वे तो किसी समानांतर आयाम में खो जाते हैं। वे रिपोर्ट्स रचते हैं, इतनी विशाल और उबाऊ कि कोई पढ़ने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता। और अपने अधिकारों की रक्षा? उसमें तो वे सिकंदर हैं। अगर कोई नियम उनके हितों के खिलाफ हो, तो सड़कें उनकी जागीर बन जाती हैं, पर जनता की समस्याओं के लिए उनकी संवेदना मानो किसी ब्लैक होल में गायब हो जाती है। डिजिटल युग की बयार ने कुछ सरकारी दफ्तरों में बदलाव की सुगंध तो ला दी है। ऑनलाइन पोर्टल, ई-गवर्नेंस, और डिजिटल फाइलें पुरातन व्यवस्था को ललकार रही हैं। मगर कर्मचारी साहब भी कम नहीं—वे इस नए युग के लिए अपने हथियार तेज कर चुके हैं! 'सर्वर डाउन है' और 'पासवर्ड भूल गए' जैसे बहानों ने पुराने 'फाइल गायब' की विरासत को बखूबी संभाल लिया है। टेक्नोलॉजी ने चेहरा बदल लिया, पर उनकी आत्मा वही शाश्वत, अडिग तालमटोल वाली है।

एक बार मैंने एक दफ्तर में देखा, एक कर्मचारी कंप्यूटर पर कुछ जोर-शोर से टाइप कर रहा था। दिल में उम्मीद जगी—शायद अब काम में रफ्तार आएगी ! पास जाकर देखा, तो साहब फेसबुक पर अपनी दशक पुरानी तस्वीरों को लाइक करने में मगन थे, मानो डिजिटल क्रांति का असली मकसद यही हो ! टेक्नोलॉजी नई, मशीनें चमकदार, पर दफ्तर का जादुई ठहराव? वह तो अब भी बरकरार है, जैसे समय का कोई लेना-देना ही न हो।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुधाकर आशावादी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक से बढ़कर एक नमूने

तुमने मुझे गाली दी या मैंने तुम्हें । किसी पर कोई फर्क नही पड़ा। सच तो यह है कि सार्वजनिक जीवन में बेशर्म चिकने घड़े अपने आप को शब्दों की मर्यादा में रख नहीं पाते। यूँ भी कह सकते हैं, कि जिन्हें शब्दों के गरिमा के अनुकूल भावों का ज्ञान होगा, वही तो शब्दों की महत्ता को समझेंगे । जिन्हें येन केन प्रकारेण किसी राजनीतिक दल में कोई ओहदा मिल गया हो, वे ओहदे की मर्यादा ही नही जानते, तो शब्दों की मर्यादा भला कैसे जानेंगे।

सार्वजनिक क्षेत्र में नेताओं का हालत किसी से छिपी नही है। स्थिति इतनी विकट है कि यदि उन्हें नित्य ही मीडिया में अच्छी कवरेज नहीं मिलती, तब वे पगला जाते हैं तथा महसूस करने लगते हैं कि वे सियासत की गलियों में गुम होते जा रहे हैं । उनके सम्मुख पहचान बनाए और बचाए रखने का संकट उपस्थित हो चुका है, उपेक्षित नेता के लिए यह स्थिति जीवन मरण का प्रश्न बन जाती है। जो उन्हें अनर्गल बयानबाजी करने के लिए विवश कर देती है। मसलन एक सज्जन ने रण भूमि में शौर्य का प्रदर्शन करने वाली वीरांगना पर ही सवाल खड़े कर दिए। उसकी निष्ठा पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया। दूसरे खिसियाए हुए सज्जन भी भला क्यों पीछे रहते।

वे पहले सज्जन से भी दो कदम आगे निकल गए। किसी वीरांगना को उसकी जातीय पहचान बताकर कमतर आंकने पर उतारू हो गए। उसके प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग कर दिया, जो आपराधिक श्रेणी में आते हैं। बहरहाल जब से सोशल मीडिया प्रभाव में आया है, तब से सस्ती लोकप्रियता के लिए बंदा किसी भी अपशब्द बोलने या किसी असामाजिक कृत्य का प्रदर्शन करने पर शर्मिंदा नहीं होता। कुछ नमूने ऐसे भी होते हैं, जो किसी खिलाडी के खेलों में प्रदर्शन को लेकर उस खिलाड़ी को ही अपनी संकीर्णता के पिटारे में बंद करने पर आमादा हो जाते हैं। खिलाड़ी के कौशल की प्रशंसा न करके उसे अपनी जाति के प्रतिनिधि तक ही सीमित कर देते हैं।

खिलाड़ी तो खिलाड़ी, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायिक अधिकारी का सरनेम देखकर ही बल्लियों उछलने लगते हैं कि उनकी बिरादरी का प्रतिनिधि ख़ास कुर्सी पर विराजमान हो गया है। अपने एक पत्रकार मित्र हैं, अपनी जाति के प्रति लगाव इतना अधिक है, कि जैसे ही उन्हें भनक लगती है, कि उनकी बिरादरी के किसी भी सदस्य ने कोई उपलब्धि प्राप्त की है, तो वह उसका प्रचार सगर्व करते हैं। इसी प्रकार किसी खिलाड़ी की उपलब्धि को बिरादरी की उपलब्धि बताकर ऐसा जताते हैं, कि जैसे उसे और उसके कौशल को किसी ने काल कोठरी में बंद कर के रखा हो। उसे उसकी इच्छानुसार अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर न प्रदान किया गया हो। विचित्र स्थिति है। चुनाव हारो तो इल्ज़ाम व्यवस्था पर लगा दो, फेल हो जाओ तो परीक्षक को दोषी ठहराओ कि परीक्षक ने परीक्षार्थी के भाव नही समझे, परीक्षार्थी के ज्ञान को समझा ही नही। बहुत से बड़बोले अपने आप पर इतना विश्वास करते हैं कि वे कुछ भी बोलना अपना अधिकार समझते हैं। वे जानते हैं कि जनता की याददाश्त बहुत कमजोर है।

वह व्यक्तिगत दुर्भावना को सम्मान नही देती। ऐसे नमूने चर्चा में रहने के लिए किसी भी रूप में सार्वजनिक क्षेत्रों में भ्रमण करते देखे जा सकते हैं। कभी कमीज के ऊपर जनेऊ धारण कर सकते हैं, कभी माथे पर चंदन का लेप लगा सकते हैं। ये नमूने मासूम बालक सरीखा व्यवहार करके उछल कूद इसलिए मचाते हैं , ताकि कोई इनकी ओर ध्यान दे। स्थिति विचित्र है । यदि कोई इनके कृत्यों और इनके वचनों पर क्रुद्ध होकर इनके विरुद्ध खड़ा होता है, तो ये तुरंत गिरगिट की तरह रंग बदलने में ही अपनी भलाई समझकर क्षमा दान माँगने लगते हैं । ऐसे नमूनों से कैसे निपटना चाहिए। यह लम्बी बहस का विषय है। फिर भी ऐसे नमूनों की मानसिक विकृति का उपचार किसी मानसिक रोग विशेषज्ञ के माध्यम से कराए जाने की सिफारिश तो की ही जा सकती है।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

नए मुख्य न्यायाधीश के नाम कई बड़े फैसले दर्ज

न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना रिटायर हो गए। इसके बाद अब न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई को सुप्रीम कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनाया गया। वे जस्टिस केजी बालकृष्णन के बाद इस पद पर नियुक्त होने वाले दूसरे दलित मुख्य न्यायाधीश हैं। उन्हें 2007 में नियुक्त किया गया था। गवई के यहां तक पहुंचने का सफर आसान नहीं है। उन्होंने अपने जीवन में काफी उतार चढ़ाव देखें और अपनी मेहनत के दम पर उस मुकाम पर पहुंचे हैं, जहां बहुत सारे लोगों का सपना होता है।

देश के नए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई का जन्म 24 नवंबर 1960 को महाराष्ट्र के अमरावती में हुआ था। कुछ मीडिया रिपोर्टस में बताया गया है कि गवई का बचपन अमरावती के फ्रीजरपुरा की झोपड़पट्टी में बीता। गवई ने क्लास 7 तक की पढ़ाई नगर पालिका के मराठी स्कूल से की। उनके पिता रामकृष्ण सूर्यभान गवई एक सामाजिक व्यक्ति थे। एक प्रसिद्ध अंबेडकर वादी नेता और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया (गवई) के संस्थापक थे। उनके अनुयायी और प्रशंसक उन्हें प्यार से 'दादा साहेब' कहते थे। जब रामकृष्ण सूर्यभान गवई छोटे थे, तब उनके पिता का सामाजिक जीवन ऐसा था कि उनकी माँ सैकड़ों आगंतुकों के लिए खाना बनाती रहती थी। हालांकि, बाद में उनके पिता रामकृष्ण सूर्यभान गवई अमरावती से सांसद भी चुने गए। इसके अलावा वे 2006 से 2011 के बीच वे बिहार, सिक्किम और केरल के राज्यपाल भी रहे।

सामाजिक कार्यों के चलते उनके पिता लंबे समय तक घर से बाहर रहते थे। ऐसे में उनकी माँ को डर था कि कहीं उनके बच्चे भी दूसरे बच्चों की तरह बिगड़ न जाएं। ऐसे में उनकी माँ कमलताई ने पूरी जिम्मेदारी ली और गवई को घर के कामों में मदद करने की आदत डाली। ऐसे में गवई को खाना बनाना, बर्तन धोना, खाना परोसना, खेतों में काम करना और देर रात बोरवेल से पानी खींचने का काम भी करना पड़ता था। उनकी माँ ने एक मीडिया से बाचतीत में बताया कि सभी बच्चों में बड़े होने के कारण वे शुरू से ही परिपक्व बच्चे थे। सन् 1971 के बांग्लादेश युद्ध के समय आर्थिक हालात खराब होने के बावजूद सैनिक उनके छोटे से घर में भोजन करते थे और उस समय भी भूषण उनकी मदद करते थे। इंडियन एक्सप्रेस में छपी रिपोर्ट के मुताबिक 84 वर्षीय कमलताई अमरावती के कांग्रेस नगर इलाके के अपने छोटे से घर में रहती हैं जहां दीवारों पर बाबासाहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर की तस्वीर सजी हैं। वह पुराने कागजों, तस्वीरों और समाचार कतरनों की एक फाइल को दिखाते हुए बताती हैं कि यह उनके बेटे की संघर्षपूर्ण यात्रा का प्रमाण है। कमलताई खुद पेशे से टीचर रही हैं। गवई के सीजीआई बनने पर वह गर्व से कहती हैं कि मेरे बच्चे को तो मुकदर का सिकंदर बनना ही था।

न्यायमूर्ति गवई ने अमरावती से पढाई करने के बाद नागपुर विश्वविद्यालय से बीए एलएलबी की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने 16 मार्च 1985 को बार में पंजीकरण कराया। न्यायमूर्ति गवई ने अपने करियर की शुरुआत 1985 में वकालत से की। उन्होंने 1987 तक पूर्व महाधिवक्ता और उच्च न्यायालय के न्यायाधीश स्व राजा एस भोंसले के साथ काम किया। सन् 1987 से 1990 तक उन्होंने बॉम्बे हाईकोर्ट में स्वतंत्र रूप से वकालत की। सन 1990 के बाद उन्होंने बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर खंडपीठ में प्रैक्टिस की। वे नागपुर नगर निगम, अमरावती नगर निगम और अमरावती विश्वविद्यालय के स्थायी वकील रहे।

न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई अगस्त 1992 से जुलाई 1993 तक बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर खंडपीठ में सहायक सरकारी वकील और अतिरिक्त लोक अभियोजक भी रहे। 17 जनवरी, 2000 को उन्हें नागपुर खंडपीठ के लिए सरकारी वकील और लोक अभियोजक नियुक्त किया गया। इसके बाद जस्टिस गवई को 14 नवंबर, 2003 को बॉम्बे हाईकोर्ट का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया। 12 नवंबर, 2005 को वे स्थायी न्यायाधीश बने। इस दौरान उन्होंने मुंबई, नागपुर, औरंगाबाद और पणजी की खंडपीठों में सभी प्रकार के मामलों की सुनवाई की। गवई को 24 मई 2019 को सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया। पिछले 6 वर्षों में, उन्होंने लगभग 700 खंडपीठों में हिस्सा लिया। उन्होंने लगभग 300 फैसले लिखे। 29 अप्रैल 2025 को बीआर गवई को सर्वोच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने की मंजूरी दी गई। अब 14 मई को वे देश के 52वें मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बन गए।

न्यायमूर्ति गवई की अध्यक्षता वाली बेंच ने तीस साल से ज्यादा समय से जेल में बंद दोषियों की रिहाई को मंजूरी दी, यह मानते हुए कि तमिलनाडु सरकार की सिफारिश पर राज्यपाल ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। तमिलनाडु सरकार को वणियार समुदाय को विशेष आरक्षण देने के निर्णय को सर्वोच्च न्यायालय ने असंवैधानिक करार दिया। क्योंकि, यह अन्य पिछड़ा वर्गों के साथ भेदभावपूर्ण था। न्यायमूर्ति गवई ने 2016 की नोटबंदी योजना को 4:1 बहुमत से वैध ठहराते हुए कहा कि यह निर्णय केंद्र सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक के बीच परामर्श के बाद लिया गया था और यह 'अनुपातिकता की कसौटी' पर खरा उतरता है। जुलाई 2023 में न्यायमूर्ति गवई की बेंच ने प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक संजय कुमार मिश्रा के कार्यकाल विस्तार को अवैध करार दिया और उन्हें 31 जुलाई 2023 तक पद छोड़ने का निर्देश दिया था।

2024 में न्यायमूर्ति गवई और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की बेंच ने कहा कि केवल आरोपी या दोषी होने के आधार पर किसी की संपत्ति को ध्वस्त करना असंवैधानिक है। कार्रवाई बिना कानूनी प्रक्रिया के नहीं कर सकते। अगर ऐसी कार्यवाही होती है तो संबंधित अधिकारी जिम्मेदार होगा। उनके अन्य महत्वपूर्ण फैसलों में मोदी सरनेम केस में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को राहत देना भी थी। उन्हें इस केस में दो साल की सजा के बाद लोकसभा से अयोग्य करार दिया गया था। उनके द्वारा सामाजिक कार्यकर्ता तीस्ता सीतलवाड़ को जमानत दी गई। दिल्ली शराब घोटाले में दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को भी जमानत दी। दिल्ली शराब घोटाले में बीआरएस नेता के कविता को भी जमानत दी।

मुख्य न्यायाधीश सहित सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा अनुच्छेद 124 (2) के तहत की जाती है। वरिष्ठतम न्यायाधीश को सेवा की अवधि के आधार पर मुख्य न्यायाधीश के रूप में नामित किया जाता है (यह एक परिपाटी है, कानूनी आवश्यकता नहीं)। मुख्य न्यायाधीश के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति को भारत का नागरिक होना चाहिये। साथ ही पांच वर्षों तक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश या दस वर्षों तक अधिवक्ता के रूप में कार्य किया होना चाहिये। ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति की राय में प्रतिष्ठित विधिवेत्ता होना चाहिये। मुख्य न्यायाधीश को राष्ट्रपति द्वारा केवल संसद के दोनों सदनों में विशेष बहुमत द्वारा समर्थित महाभियोग के बाद ही हटाया जा सकता है।

बेहतर स्वास्थ्य के लिए थोड़ा सफल, अधिक सफर बाकी

जनसंख्या संकेतकों की तस्वीर

आरती पाराशर

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

एसआरएस बुलेटिन 2021 के अनुसार, भारत की औसत जन्म दर 19.3, मृत्यु दर 7.5, तथा प्राकृतिक वृद्धि दर 11.8 है। सबसे महत्वपूर्ण संकेतक - शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) - अब भी 27 प्रति हजार जीवित जन्म पर है। दशकों से यह दर घटती रही है, परंतु यह संख्या आज भी सामाजिक असमानता, कुपोषण, और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा की कमजोर बुनियाद का संकेत देती है। ग्रामीण भारत में जन्म दर 20.9 और शिशु मृत्यु दर 30, जबकि शहरी भारत में ये क्रमशः 15.9 और 18 हैं। यह अंतर दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवा की पहुंच, गुणवत्ता और जागरूकता का लाभ अभी भी शहरी आबादी तक ही सीमित है। जन्म दर में शीर्ष राज्य बिहार (25.6), मध्य प्रदेश (23.8), झारखंड (21.8) जनसंख्या वृद्धि की उच्च गति से जूझ रहे हैं। दूसरी ओर, केरल (12.9), पंजाब (14.1) और जम्मू-कश्मीर (14.6) की जन्म दर काफी कम है, जो सामाजिक विकास और जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में सफलता का संकेत है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जनसंख्या के स्वास्थ्य की दशा केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य सेवा वितरण और नीति-निर्माण की बुनियाद को दर्शाती है। भारत सरकार के रजिस्ट्रार जनरल द्वारा मई 2025 में जारी एसआरएस बुलेटिन (सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस?टम संदर्भ वर्ष 2021) में देश की जनसंख्या संबंधी तीन प्रमुख संकेतकों - जन्म दर, मृत्यु दर, और शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) - की तस्वीर सामने आई है। यह रिपोर्ट जहां एक ओर कुछ क्षेत्रों में प्रगति की पुष्टि करती है, वहीं यह भी स्पष्ट करती है कि क्षेत्रीय असमानताएं, विशेषकर ग्रामीण भारत में, आज भी हमारे स्वास्थ्य तंत्र की सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई हैं।

एसआरएस बुलेटिन 2021 के अनुसार, भारत की औसत जन्म दर 19.3, मृत्यु दर 7.5, तथा प्राकृतिक वृद्धि दर 11.8 है। सबसे महत्वपूर्ण संकेतक - शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) - अब भी 27 प्रति हजार जीवित जन्म पर है। दशकों से यह दर घटती रही है, परंतु यह संख्या आज भी सामाजिक असमानता, कुपोषण, और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा की कमजोर बुनियाद का संकेत देती है।

ग्रामीण भारत में जन्म दर 20.9 और शिशु मृत्यु दर 30, जबकि शहरी भारत में ये क्रमशः 15.9 और 18 हैं। यह अंतर दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवा की पहुंच, गुणवत्ता और जागरूकता का लाभ अभी भी शहरी आबादी तक ही सीमित है। जन्म दर में शीर्ष राज्य बिहार (25.6), मध्य प्रदेश (23.8), झारखंड (21.8) जनसंख्या वृद्धि की उच्च गति से जूझ रहे हैं। दूसरी ओर, केरल (12.9), पंजाब (14.1) और जम्मू-कश्मीर (14.6) की जन्म दर काफी कम है, जो सामाजिक विकास और जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में सफलता का संकेत है।

मृत्यु दर में विषमता पर गौर करें तो छत्तीसगढ़ (10.1), केरल (9.0), पंजाब (8.7) में वृद्धजन आबादी अधिक है और कोविड-19 के प्रभाव भी झलकते हैं। वहीं दिल्ली और चंडीगढ़ में केवल 5.4, जो बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और संस्थागत ढांचे की उपलब्धता को दर्शाता है।

शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) असमानता का सबसे क्रूर चेहरा कहा जा सकता है। मध्य प्रदेश (41), छत्तीसगढ़ (38), ओडिशा (35) - ये आंकड़े हर हज़ार बच्चों में दर्जनों असमय मौतों की गवाही देते हैं। इसके विपरीत, केरल (6), मणिपुर, मिज़ोरम, सिक्किम (4) जैसे राज्य न केवल आईएमआर में बेहतर हैं, बल्कि यह दर्शाते हैं कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और सशक्त प्राथमिक स्वास्थ्य प्रणाली क्या कर सकती है।

आंकड़ों का विश्लेषण बताता है कि मध्य प्रदेश का शिशु मृत्यु दर राष्ट्रीय औसत से 14 अंक ऊपर है। ग्रामीण

क्षेत्रों में स्थिति और भी भयावह है - हर हज़ार बच्चों में 45 की मृत्यु, यह हमारे सार्वजनिक स्वास्थ्य की गंभीर विफलता कही जानी चाहिए।

एक दशक के दौरान आंकड़ों में हुए बदलाव उम्मीद और चेतावनी दोनों हैं। जैसे, 2012 से 2021 के बीच जन्म दर में 11 प्रतिशत की गिरावट परिवार नियोजन कार्यक्रमों की सफलता का संकेत है लेकिन मृत्यु दर का अचानक 6 से 7.5 अंक पर हो जाना कोविड-19 महामारी के प्रभाव को दर्शाता है। आईएमआर में 36 प्रतिशत (42 से 27) की गिरावट उल्लेखनीय उपलब्धि है, परन्तु क्षेत्रीय विषमताएँ इसे सीमित करती हैं।

सुधार की दिशा में सकारात्मक पहल के लिए कुछ नीतिगत कदम आवश्यक हैं। मसलन,

1. ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार - हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर की संख्या, प्रशिक्षित कर्मी और दवाइयों की उपलब्धता बढ़ाई जाए।

2. प्रसूति एवं नवजात देखभाल पर बल - संस्थागत प्रसव, नवजात टीकाकरण, व कुपोषण प्रबंधन में निवेश।

3. पिछड़े राज्यों के लिए विशेष मिशन योजनाएँ - 'आईएमआर मिशन 2027' जैसी लक्षित रणनीति।

4. मौजूदा योजनाओं को मज़बूती - जननी सुरक्षा योजना, मिशन इंद्रधनुष का समग्र क्रियान्वयन।

कहा जा सकता है कि जनसंख्या संकेतक सिर्फ आंकड़े नहीं, नीतियों का आईना हैं। भारत ने जनसंख्या स्वास्थ्य संकेतकों में लगातार सुधार किया है - यह नीति, कार्यक्रम और समुदाय के संयुक्त प्रयासों की सफलता है। लेकिन कुछ राज्य और खासकर ग्रामीण क्षेत्र, अभी भी पीछे हैं। जब तक हम इन वंचित क्षेत्रों में सेवाओं की सुलभता, गुणवत्ता और जवाबदेही सुनिश्चित नहीं करते, तब तक 'सबका स्वास्थ्य' केवल एक आदर्श बना रहेगा। शिशु मृत्यु दर जैसे संवेदनशील सूचक, केवल तकनीकी विफलता नहीं दर्शाते, बल्कि वे समाज की संवेदना, व्यवस्था की प्राथमिकता, और नीति की नीयत का भी मूल्यांकन करते हैं।

वक्रोक्ति

यशवंत गोरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें बीमारी बताऊंगा

सोफे में धंसकर और टांग पर टांग डालकर एक व्यंग्यकार मित्र के नवविमोचित व्यंग्य संग्रह को पढ़ रहे थे कि सामने बैठे घर आए मेहमान की नजर हमारे पैरों पर पड़ी। उन्होंने हमें ध्यान दिलाया कि आपके पैरों पर सूजन है। यदि हम आधी आबादी की गिनती में शामिल होते तो शायद लोगों के लिए यह एक 'गुड न्यूज़' हो सकती थी, और तुरंत खबर फैल जाती की 'गुड न्यूज़' है 'गुड न्यूज़' है। हालांकि हमें खट्टी चीजें खाने की इच्छा भी नहीं हो रही थी। हमारे शरीर का मध्य क्षेत्र कुछ ज्यादा ही विकसित होने से हम खड़े होकर अपने चरण कमल के दर्शन भी ठीक से नहीं कर पा रहे थे। मेहमान ने हमें सचेत किया की इसे हम गंभीरता से ले, पैरों पर सूजन आना अच्छा लक्षण नहीं है। वैसे हमें 'विशेष' मित्रों के साथ शाम को बैठने की आदत भी नहीं है। इसलिए हमें भी चिंता हुई। किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाने का निर्णय किया। डॉक्टर ने 5 दिन की दवाई देकर बहुत सारी जांचे करवाने की सलाह से साथ उनकी जांच रिपोर्ट आने पर फिर दिखाने की सलाह दे डाली। यह समस्या 8 नवंबर 2016 के पहले होती तो एक नोट में काम चल जाता, पर अब दो 500 के नोट फीस के रूप में डॉक्टर को देने पड़े। दवाई के पर्चे पर '5 दिन के लिए वैध' की सील लगाई गई थी , अर्थात जांच रिपोर्ट दिखाते समय फिर दो नोट देना होंगे। क्योंकि जांचे इतनी थी कि 5 दिन में पूरी हो ही नहीं सकती थी। डॉक्टर का पर्चा लेकर सबसे पहले पैथोलॉजी गए। पैथोलॉजी वाले लेब असिस्टेंट ने एक छोटी बोतल पकड़ा दी और हिदायत दी कि, सुबह जब आप पहले निवृत होने जाते हैं थोड़ा सेम्पल रख ले। हमारे सामने संकट था कि हम सुबह उठने के पहले रात में निवृत होने दो- तीन बार जाना पड़ता है। कब का सैंपल रखें ? हमने अपने विवेक से निर्णय लेकर सेम्पल रख लिया। खून की जांच के लिए हमारे बाजू को कसकर बांधा, (कमर कस कर तो हम पहले गए ही थे), खून निकलने के लिए नस ढूंढने की कोशिश करने लगे, आखिर कामयाबी मिल गई और दो सीरीज भरकर खून निकाल ही लिया। वैसे हमने अपने जीवन में कई बार रक्तदान किया है। जब- जब रक्तदान किया हमें प्रसन्नता हुई एवं गर्व का अनुभव हुआ था कि चलो हमारा खून किसी के काम तो आया। इस बार खून देते समय हमें सुभाष चंद्र बोस का वह नारा याद आ गया 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' परंतु यहां खून लेने वाला जैसा कह रहा हो 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें बीमारी बताऊंगा' । डॉक्टर ने लिखी सभी जांच करने के बाद 5 दिन बाद सभी रिपोर्ट लेकर फिर डॉक्टर के पास पहुंचे, रिपोर्ट देखकर डॉक्टर ने निश्चित करते हुए की कोई गंभीर बीमारी नहीं है। 15 दिन की दवाइयां लिखकर खाने को दी और फिर दिखाने को कहा। अभी तक हम हमारी पेंशन का 15 से 20 प्रतिशत हिस्सा हम खर्च कर चुके थे।

15 दिन की दवा लेने के बाद भी हमारे पैरों के स्थिति पत्नी के नाराज होने पर फुले हुवे गालों की तरह अभी भी फुले हुए ही थे। कुछ सलाहकार मित्रों ने आयुर्वेद का विकल्प सुझाया किसी वैद्य को दिखा दीजिये।घर में पिता से लेकर परदादा तक वैध होने से आयुर्वेदिक इलाज पर कुछ ज्यादा ही विश्वास था। इसलिए तलाश करते हुए एक अच्छे अदद वैद्य मिल ही गए। वैद्य जी ने 5 मिनट तक हमारी नाड़ी देखकर हमारे शरीर की सारी व्याधियों का बखान शुरू कर दिया। हम बड़े प्रभावित हुए और इस विश्वास के साथ की अब तो बीमारी से निजात मिल ही जाएगी। वैद्य जी बहुत सारी दवाइयां जिसमें कुछ काढ़े, कुछ वटियाँ, कुछ भस्म आदि शामिल थे देकर इलाज शुरू किया। वैद्य जी ने दवाइयां के साथ कुछ खाने-पीने की

हिदायतें भी दे डाली। तला -गला नहीं खाना है, खटाई से दूर रहे, रात में दही नहीं खाना है। यह दृढ़ संकल्प लेकर कि वैद्य जी की सलाह मानकर इन फुले हुए चरण कमल की हवा हम निकाल कर ही रहेंगे।

दवाई शुरू किए दो-तीन दिन हुए ही थे कि अचानक मौसम ने करवट बदली और बादलों के गड़गड़ाहट के साथ बारिश शुरू हो गई। सुहाना मौसम देखकर घर मेंझ पकोड़ों की मांग होने लगी। किचन में अच्छी किस्म की चिमनी लगी होने के बाद भी पकोड़े की महक हमारे पास तक पहुंच ही गई। आखिर कब तक काबू रखते, हमने भी पकोड़े खाने की इच्छा जाहिर कर ही डाली और दो प्लेट पकोड़े सूत ही डाले। दूसरे दिन सुबह मार्निंग वॉक से लौटकर चाय के साथ अखबार पढ़ रहे थे कि दरवाजे पर रोज की तरह फल वाले ने आवाज लगाई 'साहब आज बहुत अच्छा आम लाया हूं - दशहरी, लंगड़ा, चौसा, अल्फांसो, केसर, सभी किस्म का है , थोड़ी बारिश होने से आम में मिठास भी बढ़ गई है दो-चार किलो तोल दूं क्या'? एक तरफ दिमाग में वैद्य जी की हिदायतें घूम रही थी तो दूसरी तरफ फल वाले की आम की तारीफ, धर्म संकट था। आम ही एक ऐसा फल है जो आम लोगों के लिए भी खास होता है और खास लोगों के लिए तो 'आम' है ही। ऐसे कितने लोग हैं जो आम जैसा फल पसंद नहीं करते हैं? शायद कोई नहीं होगा।

आखिर मन डोल ही गया और आमों का प्रवेश हमारे घर में हो ही गया। खाने की टेबल पर कटे हुए आम ऐसे सजा कर रखे गए थे जैसे कि हमारे तरफ देखकर कह रहे हो-'क्या सोच रहे हो ? मारो झपट्टा मैं कितने दिन का हूँ , साल में एक बार ही तो आता हूं' हम उसके आग्रह को टाल नहीं सके। ऐसा लगा कि वैद्य जी की हिदायत पर नियंत्रण करना मुश्किल लग रहा है। क्यों न होम्योपैथी को आजमाया जाए।

किताबें पढ़कर नौकरी धंधों के साथ फुर्सत निकाल कर होम्योपैथी से इलाज करने वाले डॉक्टर बहुत मिल जाएंगे। सोशल मीडिया पर अपने फेसबुक मित्रों से अच्छा होम्योपैथी डॉक्टर सुझाने की मांग हमने कर डाली। डॉक्टर बताने के बजाय मित्रों ने हमारे स्वास्थ्य की चिंता करना शुरू कर दी। कुछ शुभचिंतक मित्रों ने अपने-अपने अनुभव के आधार पर डॉक्टरों के नाम सुझाए। हमने रेटिंग के हिसाब से एक अच्छे डॉक्टर का चयन किया और अपॉइंटमेंट लेकर अपनी सभी रिपोर्ट लेकर पहुंच गए। डॉक्टर ने हमारे पूरे खानदान की बीमारियों के बारे में जानकारी पूछना शुरू किया, हमारी पसंद -नापसंद के बारे में जाना, ठंडा पसंद है या गरम मीठा पसंद है या नमकीन आदि। डॉक्टर ने हमें आश्वस्त किया कि थोड़ा समय लगेगा पर, आपकी बीमारी ठीक होगी। वैद्य जी की हिदायतों को ध्यान में रखते हुए हमने, खान-पान के हिदायत के बारे में पूछा तो बोले 'कुछ ज्यादा नहीं, प्याज -लहसुन नहीं खाना है और काफी नहीं पीना है।' प्याज और लहसुन के भाव देखकर तो एक पेंशनर की हिम्मत ही नहीं है जो उसे खरीद सकें। जहाँ तक कॉफी का सवाल है, अब ऐसे साहित्यिक मित्र भी नहीं बचे जो काफी हाउस में बैठकर चिंतन कर कुछ सृजन कर सके, इसलिए काफी पीना तो वैसे भी बंद हो गया है। डॉक्टर साहब ने एक महीने की दवाइयाँ अलग-अलग समय पर लेने की सलाह के साथ तीन-चार अलग-अलग रंग के ढक्कन वाले ड्रम में दिनभर में कुछ तीन बार , तो कुछ चार बार साबूदाने जैसी गोलियां दे डाली। हमें बड़ा सुविधा जनक लगा, जेब में रखो जब याद आए खा लो। जब गोली खाने के लिए निकालते चार गोली खाना होती है तो 6 निकल आती है, वापस दो डालने जाओ तो चार चली जाती है। बच्चों के वीडियो गेम सा आनंद आता है। दवा के साथ मनोरंजन भी। खेल-खेल में पूरा दिन निकल कब निकल जाता है पता ही नहीं चलता ,और पैरों की सूजन पर ध्यान ही नहीं जाता।

किसी ने सही कहा है कि दोस्त भी तीन तरह के होते है पहले आयुर्वेद की तरह जो अच्छे तो लगते है पर इमरजेंसी में काम नहीं आते, दूसरे एलोपैथिक किस्म के इमरजेंसी में काम में तो आते है पर साइड इफेक्ट कब कर दे जाए कह नहीं सकते और तीसरे होम्योपैथी जैसे जो फायदा करे या न करे नुकसान कभी नहीं करते।

शराब के नशे में युवक ने पिया कीटनाशक, मौत

बैतूल। बिरुल बाजार में एक व्यक्ति ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। उसे शनिवार को गंभीर हालत में मुलताई सीएचसी से जिला अस्पताल रेफर किया गया था। जहां रविवार को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान सतीश पिता जयराम साहू 38 के रूप में हुई है। वो मजदूरी करता था। सतीश की पत्नी अनिता साहू ने बताया कि उनके पति शराब पीने के आदि थे। शनिवार सुबह खाना खाने के बाद वो बाजार गए थे। करीब 10 बजे नशे में धुत होकर लौटे और उन्होंने बताया कि गेहूं में डालने वाली कीटनाशक पी ली है। इसके बाद पत्नी ने तुरंत देवर को बुलवाकर उसे मुलताई सीएचसी भेजा। जहां सतीश की हालत गंभीर बनी रहने के कारण उसे जिला अस्पताल भेज दिया गया है। जहां उसकी मौत हो गई। अस्पताल पुलिस चौकी ने मृतक का पीएम कर शव परिजनों को सौंप दिया है।

चप्पल बाहर उतारकर खिड़की से मंदिर में घुसा चोर, रूपए लेकर फरार

बैतूल। शहर के विनोबा नगर के लीला देव बाबा मंदिर में रविवार रात अज्ञात चोर ने मंदिर के अंदर रखी दान पेटी से नगदी रूपये चोरी कर लिये। चोर पहले चप्पल बाहर उतारकर खिडक़ी से मंदिर के अंदर घुसा। इसके बाद दान पेटी से नकदी चुरा कर फरार हो गया। सतीश साहू ने बताया कि दो महीने से बंद दान पेटी में हजारों रुपए जमा थे। सुबह पुजारी और श्रद्धालुओं को दान पेटी का ताला टूटा मिला। खिडक़ी पर धूल में चोर के पैरों के निशान मिले। जिसके बाद मंदिर कमेटी ने पुलिस को सूचना दी। बैतूल गंज पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जो जल को बचाएगा वही समझदार कहलायेगा

जागरूकता रैली से दिया संदेश

बैतूल। पानी के बिना मनुष्य जाति की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। कहा भी जा रहा है कि अगला विश्व युद्ध पानी को लेकर होगा। मनुष्य तथा मनुष्यता को बचाने के लिए भारत के जल शक्ति मंत्रालय तथा ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से संचालित जल जन अभियान तथा स्वच्छ भारत अभियान देश के नवनिर्माण में एक सकारात्मक पहल है। लोगों में

जल एवं प्रकृति के संरक्षण के प्रति सामूहिक चेतना का निर्माण करके ही जल संरक्षण एवं स्वच्छ भारत के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। जन चेतना के इस कार्य में ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा पानी बचाने एवं अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाने हेतु जागरूकता रैली का आयोजन किया, जिसमें संस्थान में चल रहे समर कैंप में आए हुए छोटे बच्चों ने हिस्सा लिया । हाथ में तख्तियां लेकर एवं नारे लगाकर जल को बचाने एवं अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाने का संदेश दिया। दादा धूनी वाले द्वार से निकली यह रैली खंजनपुर क्षेत्र के मुख्य मार्गों से होते हुए ब्रह्माकुमारीज आनंद सरोवर पहुंची। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी सुनीता दीदी,ब्रह्माकुमारी सोनम बहन, बीके अरुणा,बीके हेमलता,बीके नंदकिशोर, कमलेश देवकते, नेहा डहरिया सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

भारतीय संगीत अध्यात्म, सुकून के साथ अब रोजगार भी : डॉ.पवन कालम्बे

बैतूल। पाश्चात्य संगीत में शोर-शराबा है, जो तनाव देता है वहीं भारतीय संगीत में में ईश्वर है अध्यात्म, भक्ति, संस्कार, सुकुन आनंद धैर्य के साथ ही अब संगीत से रोजगार भी है। यह बात अनहद कला संगीत महाविद्यालय गंज में आयोजित संगीत कार्यशाला के दौरान अतिथि और मुंबई से पधारे शास्त्रीय गायक डॉ.पवन कालम्बे ने कही। कार्यशाला में डॉ.कलांबे ने बच्चों को संगीत के बारे में बारीकी से बातें बताई और संगीत की हर गायन शैली को गाकर बच्चों के सामने राखी। उन्होने शास्त्रीय गायन, भजन, ठुमरी, गीत को सूक्ष्म तरीके से समझाया। डॉ.कालम्बे ने कहा कि शास्त्रीय संगीत में पारांगत होने और डिग्री लेने के बाद इसमें रोजगार के भी अच्छे अवसर हैं। इस अवसर पर श्री अनहद कॉलेज के कलाकार शिक्षक विद्यार्थी अभिभावक एवं संचालक दिलीप रावत, जूही रावत, योगी खंडेलवाल, श्रद्धा खंडेलवाल,शंख जैसवल, सूर्यांश वर्मा भावेश माथनकर, कपिल घुमरे देवीदास खातरकर, विनोद परिहार, नरेंद्र नाथ पाटिल उपस्थित रहें।

बरसों तक मुलताई वासियों की प्यास बुझाने वाले कुएं तोड़ रहे दम

आधा दर्जन सार्वजनिक कुएँ हार गए जीवन की जंग, संरक्षण की बाट जोह रहे पारंपरिक संस्कारों के गवाह कुंए

असलम अहमद बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी के जिन कुओं का पानी पीकर अनेकों पीढियां परवान चढी, जो कुएं वर्षों तक हमारे पारंपरिक संस्कारों के किस्से कहानियों से जुड़े रहे, आज वह कचरा घर में तब्दील होकर, या तो अपना अस्तित्व खो चुके हैं या फिर अपना भविष्य तलाशते दिखाई देते हैं। जब भी शासन परंपरागत जल स्त्रोतो के संरक्षण की योजना चलाता है, नगर वासियों की प्यास बुझाने वाले यह कुएं शासन, प्रशासन और नेताओं को आशा भरी दृष्टि से निहारते दिखाई देते हैं, किंतु योजनाएं आती है, चली जाती है, इन कुपो के अच्छे दिन कभी नहीं आते। हाल ही में जिला स्तरीय जल गंगा संवर्धन अभियान का आरंभ मुलताई ताप्ती तट से हुआ। इस अभियान का मकसद भी तालाब, नदियों, कुपो और कुओं को पुनर्जीवित करना था, लेकिन एक बार फिर एक महत्वपूर्ण अभियान दम तोड़ते कुओं को बगैर छुए गुजर गया। पवित्र नगरी के दर्जनों कुपो को शायद किसी भागीरथी की तलाश है जो इन्हें फिर से जीवनदान दे सकें ।

आधा दर्जन सार्वजनिक कुएँ हो गए जमीदोज- पवित्र नगरी के आधा दर्जन से अधिक सार्वजनिक कुएँ जीवित रहने की जंग हार चुके हैं, जिन्हें खोजना कठिन है। देखरेख के अभाव एवं बदली हुई आवश्यकता ने इनका वजूद समाप्त कर दिया। पटेल वार्ड पुराने हॉस्पिटल के सामने स्थित प्राचीन कुआं समाप्त हो गया। हाई स्कूल ग्राउंड सिविल लाइन में बना प्राचीन कुआं हाल ही में हुए भवन निर्माण के चलते मलवा भरकर बंद कर दिया गया। प्राचीन ताप्ती मंदिर गली में शिवचरण सेठ के मकान के पीछे स्थित कुआं बंद कर दिया गया। पुलिस लाइन में बरसों पुराना मीठे पानी का कुआं 1 वर्ष पूर्व

बाउंड्रीवॉल निर्माण के नाम पर कचरा भरकर बंद कर दिया गया। आज इसके अवशेष खोजना भी कठिन है। इसी प्रकार नाका नंबर 1 पर स्थित पुराने आरटीओ के सामने बना सार्वजनिक कुआं भी अब दिखाई नहीं देता। इसके अलावा नगर में जो कुएं दिखाई देते हैं, वह भी रखरखाव के अभाव में या तो कचरे से भर गए हैं या पूरी तरह से समाप्त होने की बाट जोह रहे हैं।

नगर का सदाबहार कुआं- फवारा चौक पर स्थित मामा जी का कुआं कभी नगर वासियों के लिए वरदान से कम नहीं था। भीषण गर्मी में यह कुआं कभी न खत्म होने वाले अपने जल से लोगों की प्यास बुझाता है। वर्तमान समय में भी इस कुएं का पानी अनेक परिवारों की प्यास बुझा रहा है। राजा खंडेलवाल बताते हैं कि कुछ वर्ष पूर्व मोहल्ले वालों ने मिलकर इस कुएं की सफाई की थी नगरपालिका ने आज तक इस पर कोई ध्यान नहीं दिया इसे साफ कर गहराई बढ़ाकर इस पर हेड पंप लगाया जा सकता है ताकि सदाबहार इस कुए की अमरता बनी रहे।

टेकड़ी वाले स्कूल के कुएं का बुरा हाल- नगर के अत्यंत प्राचीन स्कूलों में से एक टेकडे वाला हिंदी स्कूल का कुआं मलबे से भरता जा रहा है। धीरे-धीरे इसमें गंदगी का अंबार लग रहा है। कभी इस कुएँ में 12 माह पानी हुआ करता था, जिस में लगी गोल गर्री से पानी निकाल कर यहां के बड़े बगीचे को सिंचा जाता था, किंतु आज ना तो बगीचा है और ना ही यह कुआं पानी देने योग्य बचा है। पानी के नाम पर यहां कचरे से ऊपर तैरता जल दिखाई देता है, जो बताता है कि थोड़ी सी सफाई के बाद यह जल उगलना प्रारंभ कर देगा। इस वार्ड के पूर्व पार्षद हनी सरदार बताते हैं कि उनके प्रयास से पूर्व में कुंए पर हैंडपंप लगाया गया था। कुएं की सफाई की गई थी, किंतु उसके बाद स्थिति फिर जस की तस हो गई। नगर पालिका को नए बोर कराने के बजाय परंपरागत जल स्रोत के संरक्षण के प्रयास करने चाहिए।

कुओं का पुनरोत्थान आवश्यक क्यों?

सतपुड़ा के उत्तरी छोर पर बसा मुलताई क्षेत्र समुद्र की सतह से अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित है। ऊंचाई में पचमढ़ी के बाद मुलताई को द्वितीय स्थान प्राप्त है। घाटी क्षेत्र होने कारण वर्षा के जल को रोकना नगर के लिए बड़ी चुनौती है। अधिकांश वर्षा का जल बहकर कर ताप्ती से मिलकर अरब सागर में चला जाता है। प्रतिवर्ष होने वाले बोर निरंतर जल निकासी कर जल स्तर को नुकसान पहुंचा रहे हैं। नगर के कुएँ नगर का जल स्तर बनाए रखने का बड़ा साधन हो सकते हैं, बशर्ते हम परंपरागत जल स्रोतों का सम्मान करने आगे आएं।

आज भी प्रासंगिक है हमारी परंपराओं से जुड़े कुंए

समाप्त होते कुंओ की प्रासंगिकता को लेकर प्राचार्य एवं पर्यावरण प्रेमी आरके मालवीय, न्यू कार्मेल कान्वेंट की प्राचार्य वनिता नायर से चर्चा की तो उन्होंने बताया कि बोर एवं नल की परवर्ती वाले इस दौर में हम परंपरागत जल स्रोतों को छोडकर आगे तो बढ़ गए, किंतु इस अनदेखी के परिणाम हमें अभी से दिखाई देने लगे हैं। जलस्तर पाताल की ओर जा रहा है और समय रहते अगर हम इन कुओं की ओर नहीं लौटे तो आगामी समय में भीषण परिणाम सामने होंगे। नगर का जलस्तर जिस रफ्तार से घट रहा है, इसका एक कारण इन कुओं का कचरा घर में तब्दील हो जाना भी है। नगर में एक दर्जन से अधिक कुए हैं, जो आज छोटे से प्रयास से जीवित किए जा सकते हैं। कुछ कुंए आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने कि आज से 100 साल पहले हुआ करते थे। इतने भीषण जल संकट के दौर में जहां अनेक बोर दम तोड़ चुके हैं इन कुओ में आज पानी है।

बीजादेही रोड पर स्थित हैंडपंप बना लोगों की परेशानी का कारण

हैंडपंप में चंद मिनट ही आता है पानी, फिर हो जाता है बंद, पीएचई विभाग की लापरवाही उजागर

भौरा नगर के पंजाब नेशनल बैंक के सामने बिजादेही रोड पर स्थित प्रमुख हैंडपंप इन दिनों लोगों की परेशानी का सबब बना हुआ है। स्थिति यह है कि हैंडपंप से केवल एक-दो लोग ही पानी भर पाते हैं, उसके बाद पानी आना बंद हो जाता है। इसके चलते दुकानदारों, बैंक ग्राहकों और दूरदराज से आने वाले ग्रामीणों को भीषण गर्मी में पानी के लिए भटकना पड़ रहा है। यह हैंडपंप नगर के सबसे व्यस्त इलाकों में स्थित है, जहां सैकड़ों लोगों की आवाजाही होती है। हैंडपंप के जरिए मार्केट के दुकानदार, बैंक उपभोक्ता और राहगीर अपनी प्यास बुझाते थे, लेकिन अब हैंडपंप से कुछ ही मिनट तक पानी आता है और फिर रुक जाता है। लोग बार-बार हैंडपंप चलाते हैं, मगर कुछ ही क्षण बाद पानी रुक जाने से उन्हें निराश लौटना पड़ता है। स्थानीय लोगों के अनुसार करीब एक माह पूर्व पीएचई विभाग द्वारा हैंडपंप की मरम्मत की गई थी। उस समय एक पाइप टूटा हुआ पाया गया था,

जिसे निकालकर मैकेनिक नया लगाने के लिए ले गया था, लेकिन अब तक वह पाइप नहीं जोड़ा गया। इससे पहले भी दो पाइप निकाल लिए गए थे जिन्हें आज तक नहीं लगाया गया है। अब तीसरा पाइप भी निकाल लेने के बाद हैंडपंप की गहराई पर्याप्त नहीं बची, जिससे जलस्तर तक पाइप नहीं पहुंच पा रहे हैं।

स्थानीय दुकानदारों की नाराजगी- दुकानदार संजीव राठौर, छोटे पवार, विनीत ठाकुर, सुनील मालवीय और अजय मिश्रा ने बताया कि यह हैंडपंप पूरे मार्केट की जल आवश्यकताओं को पूरा करता था। बैंक में आने वाले बुजुर्ग और ग्रामीण भी यहीं से पानी भरते थे। अब गर्मी के इस मौसम में हैंडपंप से केवल एक-दो बाल्टी पानी निकलता है और फिर बंद हो जाता है। यह सब पीएचई विभाग की लापरवाही का नतीजा है। स्थानीय नागरिकों ने पीएचई विभाग से मांग की है कि गर्मी के इस कठिन समय में लोगों को राहत देने के लिए जल्द से जल्द इस हैंडपंप की मरम्मत कर उसमें आवश्यक पाइप जोड़े जाएं। यह हैंडपंप नगर का सार्वजनिक जल स्रोत है, जिसे चालू स्थिति में लाना जनहित के लिए आवश्यक है।

इनका कहना है -

मामले की जानकारी मिली है। मैं खुद जाकर स्थिति देखता हूं और जल्द ही नई पाइप लगवाने की व्यवस्था कराता हूं, ताकि लोगों को पानी की दिक्कत न हो।

- योगेश धुर्वे, एसडीओ, पीएचई विभाग, शाहपुर

छात्राओं के लिए सेनिटरी हाइजीन शिविर का हुआ आयोजन

डॉक्टर दीप्ति राठी ने दी स्वास्थ्य से जुड़ी अहम जानकारियां

बैतूल। महावीर इंटरनेशनल संकल्प का स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया जा रहा है। इस अवसर पर बालिका स्वास्थ्य एवं सुरक्षा योजना के अंतर्गत शासकीय जयवंती हक्सर महाविद्यालय के छात्रावास में छात्राओं के लिए सेनिटरी हाइजीन जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बैतूल की प्रसिद्ध महिला चिकित्सक डॉ. दीप्ति राठी ने 90 छात्राओं को स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं और उनके उपचार की जानकारी दी। शिविर के दौरान छात्राओं ने खुलकर डॉ. दीप्ति से अपनी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं पर चर्चा की और उनके समाधान के बारे में जाना। इस अवसर पर सभी छात्राओं को सेनिटरी नैपकिन वितरित कर उसके समुचित उपयोग सम्बंधित जानकारी दी। शिविर के आयोजन में बैतूल संकल्प की नई युवा सदस्या वीरा कृष्णा जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। शिविर में बैतूल संकल्प की अध्यक्षा वीरा पूनम मेहता, सरला शांतिलाल तातेड़, प्रतिभा लुहाडिया, जूली रांका, ममता मिरानी, सरिता गोठी, मंजु गोठी और कृष्णा जैन विशेष रूप से उपस्थित रहीं। महाविद्यालय स्टाफ और छात्रावास संचालिका ने संस्था के इस प्रयास की सराहना करते हुए इसे छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

दीपमंडई में 150 ग्रामीणों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

मिशन नेत्रालय हरदा के तत्वावधान में हुआ स्वास्थ्य परीक्षण और दवा वितरण

बैतूल। दीपमंडई स्थित शासकीय एकीकृत माध्यमिक विद्यालय परिसर में निशुल्क नेत्र शिविर और स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह शिविर मिशन नेत्रालय हॉस्पिटल हरदा के तत्वावधान में नाथूजी भूमरकर के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में लगभग 150 ग्रामीणों ने नेत्र जांच, अस्थि परीक्षण, ब्लड शुगर, बीपी जांच सहित विविध स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया। नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर प्रमोद, अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉक्टर राजेश चलोत्रे, आहार विशेषज्ञ गरिमा डोंगरे एवं श्रीमती किरण चलोत्रे ने ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच की। शिविर में मदनी, बोरदेही, सेल्टो, भयावाड़ी, कोढर, गठिया, चिखलार, इटावा और जुन्नारदेव सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों ने सहभागिता की। स्वास्थ्य परीक्षण के उपरांत आवश्यकतानुसार मरीजों को निशुल्क दवाएं भी वितरित की गईं। शिविर का विधिवत उद्घाटन ग्राम पंचायत दीपा मंडई के सरपंच बद्री प्रसाद यादव, सचिव तुलसी यादव, प्रोफेसर सुखदेव डोंगरे, लोकेश भूमरकर, संदीप भूमरकर, कमलेश भूमरकर, मल्लू भूमरकर, कोटवार हर्षित भूमरकर एवं अशोक सूर्यवंशी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। मिशन नेत्रालय हॉस्पिटल की ओर से लोकेश धनगर, गरीबा धुर्वे, शुभम राठौर और हबीब मंसूरी ने पंजीयन, ब्लड शुगर और बीपी जांच में सक्रिय योगदान दिया। शिविर की सफलता में बसोडी उइके, फुदन्ना उइके, बंसी मालवी, बिरजू भूमरकर, फागु उइके, माहेश उइके, डॉक्टर कांतिलाल खातरकर, पद्मिनी खातरकर, मोंटू झरबड़े, बलदेव कापसे, मारुति झरबड़े, संजू झरबड़े, चंद्रभान झरबड़े और लीला खातरकर ने विशेष सहयोग दिया। नाथूजी भूमरकर के जन्मदिवस के इस सेवा संकल्प में जन सहयोग की भावना से प्रेरित यह आयोजन दीपा मंडई सहित आसपास के ग्रामीणों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ।

जोश और देशभक्ति से सराबोर भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन

बैतूल। जिला मुख्यालय पर राष्ट्र प्रेम और उत्साह से ओतप्रोत भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत न्यू बैतूल ग्राउंड से की गई, जहां देशभक्ति की भावना से लबरेज जनसैलाब उमड़ पड़ा। चारों ओर भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारों से वातावरण गूंज उठा। तिरंगा यात्रा में केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य दुर्गादास उईके, विधायक हेमंत खंडेलवाल, विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, विधायक चंद्रशेखर देशमुख, सुधाकर पवार समेत कई जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक शामिल हुए। यात्रा में स्कूली बच्चे, सामाजिक संगठन,

युवा और महिलाएं भी बड़ी संख्या में भागीदार बने। यह यात्रा न्यू बैतूल ग्राउंड से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई दिलबहार चौक गंज पर समापन हुई। पूरे मार्ग में लोगों ने पुष्पवर्षा कर यात्रा का स्वागत किया और देशभक्ति गीतों से वातावरण को भावविभोर कर दिया। तिरंगा यात्रा न केवल एकता और अखंडता का प्रतीक बनी, बल्कि युवाओं में देशभक्ति की भावना को और प्रगाढ़ करने वाली साबित हुई। यह आयोजन राष्ट्र के प्रति सम्मान और समर्पण का जीवंत उदाहरण रहा।

परिवर्तन क्रांतिकारी वक्त ही कर सकता है...नारद जी क्रांतिकारी पत्रकार

विश्व संवाद केंद्र मालवा प्रांत द्वारा नारद जयंती पर किया संवाद कार्यक्रम का आयोजन

धार। स्वाभिमान को प्राप्त करना है तो पुर्नजागरण करना होगा। नारद जी है पुर्नजागरण, धर्म और संस्कृति के समवाहक है इसलिए वे देवर्षी है। देवत्व की ओर जाते है, वे सत्य से ओतप्रोत है। नारद जी सत्य वक्ता है इसलिए वे निर्भिक है। हमें भी राष्ट्र में रहकर राष्ट्रहित के लिए सोचना होगा, जो व्यक्ति राष्ट्रहित की चिंता करता है, उसकी रक्षा राष्ट्र करता है। राष्ट्र चिंतन में पत्रकारिता होना चाहिए। नारद जी सत्य के प्रतीक है। यह बात विश्व संवाद केंद्र मालवा प्रांत द्वारा आयोजन संवाद कार्यक्रम में मुख्य वक्ता देवेंद्र पाठक हरदा ने कहते हुए कहा कि समाज, संस्कृति, धर्म और राष्ट्र की उन्नति व उसके उद्धाधारक हो जाना ही नारद जयंती की सफलता है। बस यहीं विकट समस्या है हमारे सामने कि लोगों को व्यक्तत्व देना आसान है, लेकिन उसे जीवन में उतारना कठिन है। नारद जी क्रांतिकारी पत्रकार रहे है। ऐसा माना

जाता है। श्रीमद भागवत कृष्ण कथा में प्रसंग आता है कि ब्रह्मा जी नारद जी को आज्ञा देते है कि बेटा कथा ऐसी करना कि लोगों का जीवन सुधरे। परिवर्तन क्रांतिकारी वक्ता ही कर सकता है। नारद क्रांतिकारी वक्ता तो थे ही लेकिन श्रेष्ठ श्रोता भी थे। सुनना और बोलना दोनों आवश्यक है। हमारे यहां सुनने की परंपरा चली गई है। हमें उस क्रांति के विषय में सोचना होगा। संस्कृति के संवाहकों और देश के चिंतकों को विशेष रूप से पत्रकारिता के नए आयामों को स्थापित करना होगा। आज हम पाश्चात्य संस्कृति की तरफ जा रहे है और पाश्चात्य हमारी संस्कृति की तरफ बढ़ रहे है।

नारद जी का व्यक्तित्व कम समय में समझने जैसा नहीं

अध्यक्षता कर रहे जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार पं. छोटू शास्त्री ने कहा नारद जी का व्यक्तित्व महज बहुत कम समय में समझने जैसा नहीं है। नारद जी के व्यक्तित्व पर कोई बोले तो कहा जाता है कि उनके बारे में समझने का प्रयास किया जा रहा है। उस समय ऐसी परिस्थितियां नहीं थी कि कोई ब्रेकिंग चला दी और बाद में उसे हटाना पड़े। नारद जी ने जो कह दिया वह ब्रेकिंग होती थी। समुद्र मंथन हुआ तो विष निगलने की सबसे बड़ी खबर सबसे पहले नारद जी ने ही दी थी। लेकिन इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और बाद में इसको लेकर देव और दानव में युद्ध हुआ। महाभारत काल में युद्ध समाप्ति की सूचना बलराम जी को नारद जी ने दी थी। ध्रुव और प्रहलाद को भी उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान देकर महान भक्त बनाया। कहने का मतलब यह है कि नारद जी बड़े प्रासंगिक है। नारद जी जो बात कहते थे वह भय से रहित थी। उन्होंने कृष्ण के जन्म की सूचना पहले ही कंस को दे दी थी, वे निर्भिक होकर इस काम को करते थे। नारद जी का धर्म सूचना देने का था। आज हमारा भी यहीं धर्म है कि राग, द्वेष छोड़कर समाज और देशहित में काम करें।

मंत्री विश्वास सारंग ने किया नरेला विधानसभा के वार्ड 39 में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन

निरंतर विकास ही नरेला विधानसभा की पहचान है

भोपाल। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने रविवार को नरेला विधानसभा अंतर्गत वार्ड 39 के नवीन नगर में सी.सी. रोड, नाली निर्माण समेत विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। साथ ही नवीन नगर में पार्क और खेल मैदान बनाने की घोषणा भी की। मंत्री श्री सारंग ने भूमि पूजन के अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए कहा कि वर्ष 2008 से प्रारंभ हुई नरेला विधानसभा की विकास यात्रा आज निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है और यही सतत विकास आज नरेला की पहचान बन चुकी है। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि नरेला विधानसभा एक समय पर मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्षरत थी, लेकिन आज यह विधानसभा प्रदेश की अग्रणी और आदर्श विधानसभाओं में गिनी जाती है। आगे उन्होंने कहा कि हम ना केवल वर्तमान आवश्यकताओं को बल्कि भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए योजनाबद्ध तरीके से विकास कार्य कर रहे हैं। क्षेत्र के हर नागरिक को बुनियादी सुविधाओं से लेकर आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराना हमारा संकल्प है। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक सहित बड़ी संख्या में रहवासी उपस्थित रहे।

नवीन नगर के क्षेत्रवासियों का आवागमन होगा सुगम

सी.सी. रोड निर्माण सहित अन्य विकास कार्यों के भूमिपूजन से नवीन नगर एवं आसपास के क्षेत्रवासी लाभान्वित होंगे। नवीन सड़कों के निर्माण से यातायात सुगम होगा, जिससे नागरिकों को रोजमर्रा के आवागमन में राहत मिलेगी

रहवासियों ने पुष्प वर्षा कर किया भव्य स्वागत

मंत्री श्री सारंग का नवीन नगर के रहवासियों ने भूमिपूजन समारोह के दौरान पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया। साथ ही नवीन सौगात के लिए उनका आभार व्यक्त किया। इस दौरान मंत्री श्री सारंग ने भी क्षेत्रवासियों के अपार स्नेह और विश्वास के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

विश्व संग्रहालय दिवस पर 'संग्रहालय वॉक' का आयोजन, नई पीढ़ी को जोड़ने का प्रयास

धार। मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार व संग्रहालय द्वारा विश्व संग्रहालय दिवस 18 मई को मनाया गया। धार स्थित मध्यप्रदेश के सबसे प्राचीन पुरातत्व संग्रहालय किला परिसर में विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर 'संग्रहालय वॉक' का आयोजन किया गया। यह आयोजन न केवल ऐतिहासिक धरोहरों को जानने का अवसर बना, बल्कि नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

धार के पुरातत्व संग्रहालय में विश्व संग्रहालय दिवस के उपलक्ष्य में 'संग्रहालय वॉक' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भोज शोध संस्थान के निदेशक डॉ. दीपेंद्र शर्मा थे। उन्होंने कहा कि संग्रहालय केवल वस्तुओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे इतिहास का जीवंत दस्तावेज हैं। इन धरोहरों के माध्यम से नई पीढ़ी को अपने अतीत की पहचान होती है।

धार का संग्रहालय मध्यप्रदेश का सबसे प्राचीन संग्रहालय है ...

डॉ. शर्मा ने इस बात पर बल दिया कि धार का संग्रहालय मध्यप्रदेश का सबसे प्राचीन संग्रहालय है, जो स्वयं में गौरव की बात है। यहां संग्रहित अनेक धरोहरें ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे संग्रहालय में अवश्य आएं और अपनी संस्कृति से जुड़ें। कार्यक्रम में विशेष अतिथि शिक्षाविद् जयंत जोशी ने कहा कि 'नई शिक्षा नीति में भी संग्रहालयों को शैक्षणिक संसाधन के रूप में जोड़ा गया है, जिससे बच्चों को ऐतिहासिक ज्ञान और धरोहरों की समझ मिल सके।' इस अवसर पर पुरातत्व विभाग के दिनेश मंडलोई ने वरिष्ठ अधिकारी के संदेश का वाचन करते हुए संग्रहालय दिवस की महत्ता को रेखांकित किया। संग्रहालय के क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेष व्यक्तियों एवं संग्रहकर्ताओं का सम्मान भी आयोजन किया गया। इसी के तहत जनता संग्रहालय के लिए कार्य कर रहे डा. दीपेंद्र शर्मा को पुरातत्व विभाग की ओर से शॉल, श्रीफल और प्रतीकचिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। धार के जिला पुरातत्व संग्रहालय किला परिसर में 19 से 22 मई तक भी म्यूजियम वॉक का आयोजन जारी रहेगा।

डॉ. अरुण खोबरे हुए सम्मानित

भोपाल। कवि एवं प्रोफेसर डॉ. अरुण कुमार खोबरे (अरुण अज्ञानी) को विश्व की सबसे बड़ी श्रीरामचरित मानस लिखने पर पीपुल्स यूनिवर्सिटी में सम्मानित किया गया। उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार, मध्यप्रदेश निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के चेयरमैन डॉ. भरत शरण सिंह, पीपुल्स यूनिवर्सिटी की प्रो. चांसलर श्रीमती मेघा विजयवर्गीय ने उन्हें सम्मानित किया। 'समग्र शिक्षा भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता' पर पिछले दिनों आयोजित कार्यक्रम में पीपुल्स विवि के कुलगुरु डॉ. हरीश राय, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. खेमसिंह डहेरिया भी उपस्थित थे। गौरतलब है कि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में शिक्षक के साथ जनसंपर्क आदि का दायित्व भी संभाल रहे डॉ.अरुण खोबरे का नाम कुछ दिनों पूर्व रिकार्ड बुक में दर्ज किया गया। छिंदवाड़ा जिले के बदनूर में जन्मे डॉ. खोबरे ने कहा कि भगवान श्रीराम और हनुमान जी की प्रेरणा और कृपा से ही वह यह कर पाए हैं, इसलिए इस सम्मान को वे रामजी और हनुमान जी को समर्पित करते हैं।

पत्रकारों का तीर्थस्थल है माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय : मंत्री श्री विजयवर्गीय

भोपाल में डिजिटल लाइब्रेरी का लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि किसी शहर के संग्रहालय और शिक्षण संस्थान धरोहर के समान हैं इनका समृद्ध होना समाज के गौरव को बढ़ाता है। उन्होंने माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय के गौरवशाली इतिहास की प्रशंसा की। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि आधुनिक युग में नौजवान पीढ़ी के लिये डिजिटल लाइब्रेरी की सुविधा बहुत उपयोगी रहेगी। मंत्री श्री विजयवर्गीय रविवार को भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के मौके पर डिजिटल लाइब्रेरी के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में संग्रहालय की स्थापना से लेकर अब तक के सफर में सहयोग करने वाली संस्थाओं और हस्तियों का सम्मान किया गया।

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। उनके इस संकल्प को शैक्षणिक संस्थानों को समृद्ध करके पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सप्रे संग्रहालय की शुरूआत एक छोटे स्वरूप में हुई थी। लगभग पिछले 4 दशकों में इस संस्थान ने अपनी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर ली है। पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री सुरेश पचौरी ने अपने उदबोधन में कहा कि श्री विजयदत्त श्रीधर ने अपनी लगन से भोपाल शहर को एक अमूल्य धरोहर दी है, जिसका लाभ लोकतंत्र के चौथे स्तंभ कहे जाने वाले पत्रकारों को निरंतर मिलता रहेगा। पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री पचौरी ने भारतीय स्टेट बैंक के सीएसआर फंड से दी जाने वाली मदद को सराहनीय बताया।

संस्थान के संस्थापक सदस्य श्री विजयदत्त श्रीधर ने बताया कि माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान पुस्तकालय सेवा के 3 प्रारूप में कार्यरत है। पत्रकार एवं पाठक वर्ष 1984 से इसका लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय स्टेट बैंक की सामाजिक सेवा बैंकिंग के अंतर्गत सीएसआर मद से उपलब्ध धन राशि से सप्रे संग्रहालय के 20 लाख दुर्लभ दस्तावेजों और पुराने जर्जर पृष्ठों का डिजिटलीकरण हुआ है। संग्रहालय की संदर्भ सामग्री का फायदा लेकर 1240 शोधार्थियों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों से पीएचडी एवं डी.लिट्. की उपाधियां अर्जित की हैं। संग्रहालय में बिजली की बचत के लिये 10 किलोवाट क्षमता क सौर ऊर्जा पैनल भी लगाये गये है।

समारोह में सहयोग देने वाली संस्थाओं के साथ श्री शिवकुमार अवस्थी, स्व. सुरेश शर्मा, स्व. शौकत रमूजी के उल्लेखनीय योगदान के लिये उनके परिजनों को सम्मानित किया गया।

पुलिस ने अवैध शराब, ऑटो से परिवहन करने वाले आरोपी को किया गिरफ्तार

बैतूल। पुलिस ने अवैध रूप से आटो में शराब रखकर परिवहन करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुई थी कि एक व्यक्ति अपनी आटो में कच्ची महुआ शराब बेचने की नियत सोनाघाटी तरफ लेकर जा रहा है। सूचना पर थाना कोतवाली बैतूल के द्वारा टीम गठित कर मुखबीर के बताये हुये स्थान के लिये पुलिस टीम को रवाना किया गया, जहां साक्षियो एवं पुलिस टीम के द्वारा आटो को घेराबंदी कर पकडा गया। आटो को चैक किया गया। आटो के अंदर पृथक-पृथक थैलो एवं खुले रूप में 1-1 लीटर की प्लास्टिक की बाटलो में हाथ भट्टी की कच्ची महुआ शराब करीब 200 लीटर कुल कीमती करीब 20,000 रुपये की मिली। आटो क्रमांक एमपी 48 आर 1344 कीमती करीबन 1 लाख 40 हजार, कुल कीमती 160000 रुपये (एक लाख साठ हजार रुपये) को विधिवत जप्त किया गया है। आरोपी रिंकू उर्फ विवेक मसीह के विरूध्द थाना कोतवाली बैतूल में अपराध आपराध धारा 34 (2) आबकारी एक्ट का पंजीबध्द कर विवेचना मे लिया गया।

केंद्रीय मंत्री शिवराज ने नागपुर में 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के अंतर्गत किसान सम्मेलन में सहभागिता कर जनसमूह को किया संबोधित

'कृषि मंत्रालय एक राष्ट्र-एक कृषि-एक टीम' की थीम पर करेगा काम : केंद्रीय मंत्री शिवराज

नागपुर/नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज महाराष्ट्र के नागपुर में 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के अंतर्गत आयोजित किसान सम्मेलन में सहभागिता कर उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस ने कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रगतिशील किसानों को सम्मानित कर अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में महाराष्ट्र सरकार के कृषि मंत्री श्री माणिकराव कोकाटे, मंत्री श्री आशीष जायसवाल, श्री चंद्रशेखर बावनकुले, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आज हम महाराष्ट्र से 'एक राष्ट्र, एक कृषि और एक टीम' का ऐलान कर रहे हैं। आज यहां केंद्र सरकार है, राज्य सरकार है, मुख्यमंत्री, कृषि मंत्री, सांसद, विधायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक और कृषि विभाग का पूरा अमला उपस्थित है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, राज्य कृषि मंत्रालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), कृषि विज्ञान केंद्र और सभी कृषि संस्थान एक टीम की तरह मिलकर काम करें। शिवराज सिंह ने कहा कि सभी संस्थाओं को जोड़ दिया जाए, लक्ष्य तय कर दिया जाए, रोडमेप बना दिया जाए तो खेती में चमत्कार किया जा सकता है। शिवराज सिंह ने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज की पुण्य भूमि महाराष्ट्र अद्भुत है। यहां के किसान मेहनती और प्रगतिशील हैं, उनके भीतर अनंत संभावनाएं समाहित हैं। मुख्यमंत्री को साधुवाद देते हुए केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने कहा कि वे खेती की तस्वीर और किसानों की तकदीर बदलने के लिए सतत प्रयासरत हैं।प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमारे किसान आत्मनिर्भर बनें, उनकी आय बढ़े, इसके लिए हम सभी मिलकर एक टीम के रूप में कार्य करेंगे।

शिवराज सिंह चौहान ने एक और बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि हम क्लीन प्लांट प्रोग्राम अंतर्गत पुणे में राष्ट्रीय स्तर की लैब बनाने जा रहे हैं। पौधों की मूल प्रजातियों के अनुसंधान हेतु पुणे में यह प्रयोगशाला स्थापित की जाएगी। नागपुर के कविवर्य सुरेश भट सभागार में आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत कृषि संवाद कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने विदर्भ के किसानों से संवाद करते हुए यह बात कही। शिवराज सिंह ने कृषि उत्पादन बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि शुद्ध और रोगमुक्त पौधशाला सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छ पौधा कार्यक्रम (क्लीन प्लांट प्रोग्राम) चलाया जा रहा है। उत्पादन बढ़ाने के लिए अच्छे गुणवत्ता के बीज, मृदा परीक्षण और उत्पादन लागत में कमी लाना किसानों को समझना चाहिए।

इस अवसर पर श्री चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि ICAR की देशभर में 113 संस्थाएं हैं, जिनमें से 11 संस्थाएं महाराष्ट्र में हैं। नागपुर की मृदा सर्वेक्षण संस्था (NBSSLUP) में इन सभी संस्थाओं के प्रमुखों के साथ बैठक की जाएगी और इस बैठक से महाराष्ट्र के कृषि विकास की दिशा तय होगी। प्रयोगशाला और जमीन (खेतों) के बीच की खाई कम करने के लिए मोदी सरकार प्रतिबद्ध है। देशभर में ICAR संस्थाओं के 16,000 कृषि वैज्ञानिक हैं, और ICAR के वैज्ञानिक कृषि विस्तार अधिकारियों के साथ एक टीम के रूप में गांवों का दौरा करेंगे तथा किसानों को नई किस्मों के बीजों एवं कृषि में नए नवाचारों के बारे में शिक्षित करेंगे। आगामी 29 मई से 12 जून तक चलने वाले इस पंद्रह दिवसीय अभियान में खरीफ सीजन की योजना के लिए कृषि वैज्ञानिक गांवों का दौरा करेंगे और किसानों को सतत कृषि के बारे में भी मार्गदर्शन देंगे। शिवराज सिंह ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने के लिए हमारे प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी जी प्राण-प्रण से जुड़े हुए हैं। मोदी जी का लक्ष्य है एक गौरवशाली, शक्तिशाली, सम्पन्न, समृद्ध, विकसित भारत का निर्माण।

सड़क सुरक्षा सप्ताह पर सुख शांति भवन से निकाली गई जागरूकता रैली

ब्रह्मकुमारीज़ द्वारा सड़क सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर भोपाल के विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता रैलियों का आयोजन

भोपाल। सड़क सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर सुख शांति भवन में आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत एक जागरूकता रैली निकाली गई, जिसका उद्देश्य लोगों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति सचेत करना था।

विषय को स्पष्ट करते हुए नर्सिंग ऑफिसर बीके सुनीता बहन ने कहा कि 8वें संयुक्त राष्ट्र वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह का विषय पैदल चलना और साइकिल चलाना सुरक्षित बनाएं है, जिसका उद्देश्य पैदल चलने वालों और साइकिल चालकों के लिए सुरक्षित सड़कों को बढ़ावा देना है।

वहीं डॉ प्रियंका नेगी (मेडिकल ऑफिसर, इंद्रा गांधी चिकित्सालय भोपाल) ने आंकड़ों पर ज़ोर देते हुए बताया कि वैश्विक स्तर पर, सड़क दुर्घटनाओं के कारण प्रति वर्ष लगभग 1.3 मिलियन मौतें और 50 मिलियन लोग घायल होते हैं - जिससे यह दुनिया भर में बच्चों और युवाओं की हत्या करने वाली प्रमुख घटना बन जाती है।

भारत में सड़क दुर्घटनाओं के नवीनतम आँकड़े

2023 में सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु:1.73 लाख लोग मारे गए, जो प्रतिदिन औसतन 474 मौतों के बराबर है। यह अब तक का सबसे अधिक वार्षिक आंकड़ा है। 2023 में 4.63 लाख लोग घायल हुए, जो 2022 की तुलना में 4त्न अधिक है।

उन्होंने हॉस्पिटल में आने वाले मरीजों के विषय में साझा करते हुए कहा कि प्रमुख कारण तेज़ रफ्तार, हेलमेट

का उपयोग न करना, और यातायात नियमों का उल्लंघन। दोपहिया वाहन चालकों की मृत्यु दर सबसे अधिक है, जिनमें से 70त्न ने हेलमेट नहीं पहना था।

साथ ही साथ राज्यवार स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया कि उत्तर प्रदेश (23,652 मौतें), तमिलनाडु (18,347), महाराष्ट्र (15,366), मध्य प्रदेश (13,798), और कर्नाटक (12,321) सबसे अधिक प्रभावित राज्य हैं।

रैली की शुरुआत सुख शांति भवन से हुई, जिसे संस्थान की निदेशिका आदरणीय राजयोगिनी नीता दीदी जी एवं गिरीश सारस्वत(ट्रैफिक पुलिस अधिकारी) ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रैली में बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने हाथों में सड़क सुरक्षा से संबंधित स्लोगन और पोस्टर लेकर आमजन को नियमों के पालन का संदेश दिया। रैली नगर के मुख्य मार्गों से होकर गुज़री और पूरे मार्ग में लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसमें 'हेलमेट पहनें जीवन बचाएं', ' धीमी गति सुरक्षित जीवन ', ' मोबाइल से नहीं, सड़क पर ध्यान दें' जैसे नारों की गूंज सुनाई दी।

रैली के समापन पर सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया और उन्हें सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई ।

इस अवसर पर सारस्वत जी ने कहा कि ऐसी रैलियां समाज में जागरूकता फैलाने का प्रभावी माध्यम हैं और आगे भी इस प्रकार के प्रयास किए जाते रहेंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि सदैव हेलमेट लगाकर एवं सीट बेल्ट पहनकर ही वाहन चलाएं।एवं छोटे बच्चों को जब साथ में लेकर जाए तो हाथ जरूर पकड़े।साथ-साथ उन्होंने निवेदन किया कि जब भी सड़क पर चले तो फुटपाथ, जो की पैदल चलने वालों के लिए बनाया गया इस पर चले एवं ज़ेबरा क्रॉसिंग का प्रयोग अवश्य करें।इस तरह उन्होंने विस्तार से सभी ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरुक करते हुए सभी को पालन करने का निवेदन किया।

आदरणीय नीता दीदी जी ने प्रेरणाएं देते हुए कहा कि यह रैली सड़क सुरक्षा के प्रति आम जन में चेतना जगाने की दिशा में एक सफल और प्रेरणादायक पहल रही।

साथ ही साथ लालघाटी क्षेत्र में भी रैली का आयोजन किया गया जिसमें श्री सारस जी (सुपरिंटेंडेंट, जेल उमरिया) श्री विवेक जी (सब इंस्पेक्टर ट्रैफिक पुलिस) शामिल हुए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रेरणा भारद्वाज को पुन : मेयर चुने जाने पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय मूल की सुश्री प्रेरणा भारद्वाज को बकिंघमशायर (यूनाइटेड किंगडम) काउंसिल में एक बार पुनः मेयर चुने जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि सुश्री भारद्वाज ने अपनी यह उपलब्धि बाबा महाकाल और मां बगलामुखी को समर्पित की है, जो अपनी मातृभूमि से उनके सतत् जुड़ाव के संस्कार का प्रेरणादायक प्रमाण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सुश्री भारद्वाज के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि हमारी बहन प्रेरणा भारद्वाज अपने सेवा कार्यों और समर्पण से भारत राष्ट्र की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों पर प्रतिस्थापित करेंगी।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने रविवार को पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय अनिल माधव दवे की पुण्यतिथि पर भोपाल स्थित उनके निवास पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

कर्मयोगी हैं प्रदेश के कर्मचारी, उनकी कर्तव्य निष्ठा से ही देश के अग्रणी राज्यों में शामिल है हमारा प्रदेश: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री ने कर्मचारियों को स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ प्रदान करने की मांग को किया स्वीकृत

मुख्यमंत्री का कर्मचारी हितैषी निर्णयों के लिए मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ ने किया अभिनंदन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आम आदमी के जीवन को सुगम बनाने के लिए सुव्यवस्था स्थापित करना राज्य सरकार का उद्देश्य है। इस मंशा का सफल क्रियान्वयन सरकार के कर्मचारियों पर निर्भर करता है, इस दृष्टि से प्रदेश के कर्मचारी सच्चे कर्म योगी हैं। कर्मचारियों के परिश्रम और समर्पण से ही जनकल्याण और विकास के पथ पर हमारा प्रदेश अग्रसर है। कर्मचारियों की कर्तव्य निष्ठा से जनहित की योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश के अग्रणी राज्य में शामिल हुआ है। प्रदेश के कर्मचारी सरकार और जनता के बीच नल और नील की तरह सेतु बनाने का कार्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रवींद्र भवन में मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के अभिनन्दन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा गत माह लिए गए कर्मचारी हितैषी निर्णयों के लिऐ मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ ने रविंद्र भवन में उनका अभिनंदन किया। कर्मचारी संघ के सदस्यों ने अंगवस्त्रम भेंट कर मुख्यमंत्री डॉ.यादव का तिलक किया। इसके साथ ही उन्हें शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। कर्मचारी संघ की ओर से मुख्यमंत्री डॉ.यादव को वृहद आकार की मालाएं पहनाकर उनका अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित करने के बाद मां सरस्वती और पूर्व वरिष्ठ श्रमिक नेता स्व. दत्तोपंत ठेंगड़ी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विधायक श्री भगवानदास सबनानी, मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत श्रीवास्तव तथा महामंत्री श्री जितेंद्र सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कर्मचारी संघ की ओर से कर्मचारियों को स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ प्रदान करने की मांग स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार कर्मचारी कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने केंद्र सरकार का अनुसरण करते हुए प्रदेश के कर्मचारियों का महंगाई भत्ता केंद्र के समान करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही 9 वर्षों से लंबित हाउस रेंट अलाउंस की मांग को भी पूरा किया गया है। इसके साथ ही अधिकारियों- कर्मचारियों और उनके परिवारों की सुविधा को देखते हुए प्रदेश में स्थानांतरण नीति का क्रियान्वयन किया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने कर्मचारियों की लंबित समस्याओं के समाधान का वादा किया था। क्रमबद्ध रूप से सभी समस्याओं का निराकरण किया गया है। रिक्त पदों पर भर्ती के लिए विशेष अभियान संचालित हैं। पुलिस में सभी पद भरे गए हैं। इसके साथ ही सभी जिलों में बैंड की पुलिस बैंड की स्वीकृति प्रदान की गई है। रिक्त हुए पदों को प्रतिवर्ष लोक सेवा आयोग की परीक्षा आयोजित कर भरने की प्रक्रिया सुनिश्चित की जा रही है। शासकीय कर्मचारियों की सुविधा के लिए शासकीय आवास की व्यवस्था प्राथमिकता पर की जा रही है। प्रदेश में लोक परिवहन के लिए बस सेवा भी आरंभ होने जा रही है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि न्यू मार्केट में बने 3000 नवीन आवासों का लोकार्पण कर कर्मचारियों को आवंटित किया गया। यह कर्मचारियों के जीवन को अधिक आरामदायक बनाने का एक प्रयास है। इसी प्रकार आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मिनी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के बीमा कवर का लाभ देने की स्वीकृति दी गई। प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल पर स्वास्थ्य बीमा का सुरक्षा कवच अधिकांश देशवासियों को उपलब्ध कराया जा रहा है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कर्मचारियों की स्वास्थ्य बीमा संबंधी मांग स्वीकृत करने की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है। राज्य सरकार रोजगार परक उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन उपलब्ध करा रही है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन को भी 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का लक्ष्य है। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा निर्धारित चारों श्रेणियों, युवा- महिला- किसान- गरीब की बेहतरी के लिए प्रदेश में अनेकों गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। प्रदेश में बिजली, पानी, सड़क और अधोसंरचना की स्थिति कई राज्यों से बेहतर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभिनंदन के लिए कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि सरकार और कर्मचारी प्रदेशवासियों के जीवन की बेहतरी के लिए एक टीम की तरह लगातार काम करते रहेंगे।

भोपाल में पेड़ों को बचाने आगे आए लोग,पेड़ों से चिपके

अयोध्या बायपास को चौड़ा करने कटेंगे 8 हजार पेड़

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आसाराम तिराहे से रत्नागिरी तिराहे तक अयोध्या बायपास के रोड चौड़ीकरण में 8000 पेड़ों को काटा जाएगा। इस प्रोजेक्ट को नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) कर रही है। इन्हीं पेड़ों को बचाने के लिए विरोध प्रदर्शन भी किए जा रहे हैं। रविवार की शाम को बड़ी संख्या में लोग यहां जुटे। पेड़ों को रक्षासूत्र भी बांधें गए। कई बच्चे तो पेड़ों से ही चिपक गए।

प्रदर्शन में बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक शामिल हैं। हाथों में स्लोगन लिखी तख्तियों के साथ वे प्रदर्शन में शामिल हैं। उनका कहना है कि पेड़ बचेंगे तो हम बचेंगे। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत काटे गए पेड़ों को लेकर भी उन्होंने नाराजगी जाहिर की। पर्यावरणविद् उमाशंकर तिवारी ने बताया, विकास जरूरी है, पर हरियाली के साथ ऐसा नहीं होने देंगे। एनएचएआई को प्रोजेक्ट में बदलाव करना चाहिए। ताकि, प्रोजेक्ट भी पूरा हो और पेड़ भी न काटे जा सकें। हाथों में तख्तियां लेकर पेड़ काटे जाने का विरोध करते लोग।

डॉ. राजीव जैन ने बताया कि हमें भी विकास चाहिए, लेकिन विनाश की शर्त पर नहीं चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी एक पेड़ मां के नाम और खुद सीएम मोहन इस मुहिम को चला रहे हैं। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान भी स्मार्ट सिटी पार्क में रोज एक पेड़ लगाते रहे हैं। ऐसे में हम पेड़ों की कटाई नहीं होने देंगे।

इसे लेकर शनिवार को बैठक भी कर चुके हैं। जिसमें पर्यावरणप्रेमी पूर्व मंत्री दीपक जोशी, नितिन सक्सेना, कमल राठी, डॉ. राजीव जैन, सुयश कुलश्रेष्ठ, सुनील अवसरकर, उमाशंकर तिवारी, अंशु गुप्ता, समता अग्रवाल, अरुणा शर्मा, दीपक गुप्ता, अल्पना झा, डॉ. रचना डेविड, केडी मिश्रा, अखलाक अहमद, रुचिका सचदेवा, सैफुद्दीन, श्याम सुंदर शर्मा, दीपक उपाध्याय, आरडी दिलारे आदि मौजूद थे। तिवारी ने कहा कि शीघ्र उचित कार्रवाई न होने पर आने वाले समय में भूख हड़ताल, धरना प्रारंभ किया जाएगा।

10 लेन बनाया जा रहा अयोध्या बायपास- बता दें कि इस रोड पर 3 ब्लैक स्पॉट हैं, जहां साल भर में 30-35 लोगों की मौत हो जाती है। इसलिए सड़क को सर्विस लेन मिलाकर 10 लेन किया जा रहा है। विरोध की आशंका को देखते हुए एनएचएआई ने हाईकोर्ट और एनजीटी में कैविएट दायर की है। ताकि न्यायालय कोई भी स्टे देने से पहले एनएचएआई का पक्ष सुने।

पेड़ों को बांध चुके रक्षासूत्र- इससे पहले भी लोग प्रदर्शन कर चुके हैं। बड़ी संख्या में लोगों ने रत्नागिरी तिराहे पर पहुंचकर पेड़ों को रक्षासूत्र बांधे थे। साथ ही उन्हें बचाने का संकल्प लिया था। आयोजन की अगुआई श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने की थी। उन्होंने कहा- यह सिर्फ पेड़ों की लड़ाई नहीं है, बल्कि हमारे अस्तित्व की लड़ाई है। हम इन पेड़ों को कटने नहीं देंगे। गुप्ता ने खुद पेड़ों को रक्षासूत्र बांधते हुए आंदोलन की शुरुआत की थी।

निरीक्षक पद पर पदोन्नति का विवाद गहराया

हाईकोर्ट ने पुलिस मुख्यालय के आदेश पर लगाई रोक

इंदौर/भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश पुलिस विभाग में उप निरीक्षकों से निरीक्षक पद पर पदोन्नति का मामला एक बार फिर कानूनी पचड़े में फंस गया है। माननीय उच्च न्यायालय खंडपीठ इंदौर ने सीधी भर्ती वर्ष 2015 के उप निरीक्षकों को निरीक्षक पद पर उच्च पद का कार्यभार प्रभार दिए जाने के संबंध में पुलिस मुख्यालय द्वारा 6 मई 2025 को जारी आदेश पर तत्काल रोक लगा दी है। यह अंतरिम रोक पदोन्नति के उप निरीक्षकों द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए लगाई गई है और न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि यह कार्रवाई याचिका के अंतिम निराकरण तक प्रभावी रहेगी।

न्यायालय का यह फैसला पुलिस मुख्यालय के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है, जिसने पहले भी इसी तरह की प्रक्रिया अपनाकर विवादों को जन्म दिया था। उल्लेखनीय है कि पुलिस मुख्यालय ने वर्ष 2021 में भी उच्च पद का कार्यभार देने की प्रक्रिया शुरू की थी और कई उप निरीक्षकों को निरीक्षक पद का प्रभार सौंप दिया था। हालांकि, इस आदेश और वर्ष 2020 की वरिष्ठता सूची को पदोन्नति के उप निरीक्षकों ने मध्य प्रदेश सिविल सेवा नियम, 1961 के नियम 8, 10, 12 तथा मध्य प्रदेश पुलिस नियम, 1997 के विपरीत बताते हुए माननीय न्यायालय में चुनौती दी थी।

इस मामले में लंबी सुनवाई के बाद, 29 फरवरी 2024 को माननीय न्यायालय ने पदोन्नति के उप निरीक्षकों के पक्ष में फैसला सुनाया था। न्यायालय ने पुलिस मुख्यालय द्वारा जारी उप निरीक्षकों को निरीक्षक पद पर दिए गए कार्यभार प्रभार/पदोन्नति आदेश को कानून की दृष्टि में मान्य नहीं ठहराया था। न्यायालय ने कड़ी टिप्पणी करते हुए वर्ष 2021 के आदेश को निरस्त कर दिया था और शासन को नियमों के विपरीत बनी वरिष्ठता सूची को तीन माह के भीतर नियम अनुसार पुनः जारी करने के स्पष्ट निर्देश दिए थे।

वरिष्ठता का पेचीदा मामला

दरअसल, इस पूरे विवाद की जड़ उप निरीक्षक सीधी भर्ती और पदोन्नति के माध्यम से भर्ती हुए उप निरीक्षकों की वरिष्ठता का निर्धारण है। नियमों के अनुसार, निरीक्षक पद पर पदोन्नति के लिए पदोन्नति से आए उप निरीक्षकों का 50 प्रतिशत कोटा निर्धारित है। इन उप निरीक्षकों को अपनी लंबी सेवा के बाद पदोन्नति मिलती है। वहीं, सीधी भर्ती के उप निरीक्षकों के लिए निरीक्षक पद पर पदोन्नति की पात्रता अवधि नियमों में 6 वर्ष निर्धारित है, जबकि पदोन्नति से आए उप निरीक्षकों के लिए यह अवधि 4 वर्ष है।

पदोन्नति से आए उप निरीक्षकों का आरोप है कि पुलिस मुख्यालय ने नियमों का स्पष्ट उल्लंघन करते हुए सीधी भर्ती के उप निरीक्षकों को अनुचित लाभ पहुंचाया है। मुख्यालय ने वरिष्ठता की गणना करते समय सीधी भर्ती के उप निरीक्षकों को प्राथमिकता दी और उनकी परिवीक्षाधीन अवधि (प्रोबेशन पीरियड) को भी उनकी वरिष्ठता में जोड़ दिया। इसके विपरीत, नियमों के तहत परिवीक्षा अवधि समाप्त होने की तिथि से ही सीधी भर्ती के उप निरीक्षकों को वरिष्ठता प्रदान की जानी चाहिए। इस अनियमितता के कारण, सीधी भर्ती के कई ऐसे उप निरीक्षक भी निरीक्षक पद का कार्यभार प्राप्त करने में सफल हो गए, जो नियमों के अनुसार अभी इसके पात्र नहीं थे।

पदोन्नति के उप निरीक्षकों का यह भी कहना है कि निरीक्षक पदों पर वर्तमान में लगभग 75 प्रतिशत सीधी भर्ती के उप निरीक्षक कार्यरत हैं, जबकि पदोन्नति से आए उप निरीक्षकों का प्रतिनिधित्व मात्र 25 प्रतिशत ही शेष रह गया है। यह स्थिति संवैधानिक रूप से निर्धारित 50-50 प्रतिशत के प्रतिनिधित्व के सिद्धांत के विपरीत है और पदोन्नति के अवसर को गंभीर रूप से सीमित करती है।

पुलिस मुख्यालय के खिलाफ अवमानना

माननीय उच्च न्यायालय द्वारा 29 फरवरी 2024 को स्पष्ट आदेश पारित किए जाने के बावजूद, पदोन्नति के उप निरीक्षकों का आरोप है कि पुलिस मुख्यालय ने एक वर्ष से अधिक का समय बीत जाने के बाद भी उस आदेश का पालन नहीं किया है। इससे व्यथित होकर पदोन्नति के उप निरीक्षकों ने माननीय न्यायालय में पुलिस मुख्यालय के खिलाफ न्यायालय के आदेश की अवमानना याचिका भी दायर की है।

इन सबके बावजूद, पदोन्नति के उप निरीक्षकों का कहना है कि पुलिस मुख्यालय ने अपनी त्रुटिपूर्ण कार्रवाई को जारी रखते हुए और उसी के अनुरूप अन्य आदेश भी जारी किए हैं। इसी क्रम में, पुलिस मुख्यालय ने 6 मई 2025 को सीधी भर्ती वर्ष 2015 के उप निरीक्षकों को उच्च पद का कार्यभार दिए जाने के संबंध में एक और पत्र जारी कर दिया, जिसमें पदोन्नति के उप निरीक्षकों की फिर से अनदेखी की गई।

इस ताजा आदेश से आक्रोशित होकर पदोन्नति के उप निरीक्षकों ने एक बार फिर माननीय उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। इस मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस श्री विजय कुमार शुक्ला की एकल पीठ ने पुलिस मुख्यालय के इस नए आदेश और पूरी प्रक्रिया पर याचिका के अंतिम निराकरण तक रोक लगा दी है। न्यायालय ने इस मामले में राज्य शासन और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी कर चार सप्ताह के भीतर विस्तृत जवाब मांगा है।

हाईकोर्ट के इस अंतरिम आदेश ने पुलिस विभाग में पदोन्नति को लेकर चल रहे लंबे समय से चले आ रहे विवाद को और गहरा दिया है। पदोन्नति के उप निरीक्षकों को उम्मीद है कि न्यायालय इस बार उनकी शिकायतों पर गंभीरता से विचार करेगा और नियमों के अनुसार वरिष्ठता का निर्धारण कर उन्हें न्याय दिलाएगा। वहीं, पुलिस मुख्यालय पर अब इस मामले में न्यायालय के निर्देशों का पालन करने का दबाव बढ़ गया है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि पुलिस मुख्यालय इस मामले में अपना क्या रुख अपनाता है और न्यायालय के समक्ष क्या जवाब प्रस्तुत करता है। इस पूरे घटनाक्रम पर पुलिस विभाग के कर्मचारियों की निगाहें टिकी हुई हैं, क्योंकि इसका सीधा असर उनकी करियर की संभावनाओं पर पड़ने वाला है।

इंदौर में 20 मई को होगी मुख्यमंत्री मोहन यादव की अध्यक्षता में कैबिनेट बैठक

माँ अहिल्या की 300वीं जन्मशताब्दी के अवसर पर देखने माता अहिल्या पर आधारित नाट्य मंचन,सराफा विजिट, विकास कार्यों का भी करेंगे निरीक्षण

इंदौर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में आगामी 20 मई को इंदौर में राज्य मंत्रिमंडल की एक महत्वपूर्ण कैबिनेट बैठक आयोजित की जाएगी। यह बैठक प्रशासनिक दृष्टि से जितनी अहम है, उतनी ही सांस्कृतिक और विकासात्मक दृष्टि से भी इंदौर के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है। महापौर पुष्यमित्र भार्गव एवं भाजपा नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने बताया कि इस बैठक को लेकर जिला प्रशासन द्वारा तैयारियाँ लगभग पूर्ण कर ली है कैबिनेट बैठक के साथ-साथ प्रस्तावित विशेष कार्यक्रमों और शहर के प्रमुख स्थलों के दौरे की रूपरेखा भी तैयार की जा चुकी है।

19 मई की रात मुख्यमंत्री और मंत्रीगण का होगा इंदौर आगमन- महापौर पुष्यमित्र भार्गव एवं भाजपा नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने बताया कि *मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 19 मई की रात को समस्त मंत्रिमंडल के साथ इंदौर पधार रहे है इस दिन मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव अपनी कैबिनेट के साथ लता मंगेशकर ऑडिटोरियम में माता अहिल्या पर आधारित नाट्य मंचन भी देखेंगे साथ ही सराफा बाजार चौपाटी भी जाएंगे।

वहीं 20 मई को होने वाली कैबिनेट बैठक के पश्चात, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में इंदौर में चल रहे प्रमुख विकास कार्यों का निरीक्षण भी किया जाएगा। इनमें विशेष रूप से वे प्रोजेक्ट शामिल होंगे, जिन्होंने शहर को देश में नम्बर वन बनाया है उसमें हुकुमचंद मिल हो इंदौर मेट्रो प्रोजेक्ट हो ,स्वच्छता और डिजिटलाइजेशन हो वो सम्मिलित है

कही-सुनी

छत्तीसगढ़ के माथे से मिटता दाग

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

नक्सल समस्या के कारण छत्तीसगढ़ का विकास तो प्रभावित हो ही रहा था। इस समस्या के कारण देश में छत्तीसगढ़ की पहचान समस्याग्रस्त राज्य की बन गई थी। आए दिन नक्सलियों के उत्पात के कारण लोग छत्तीसगढ़ आने में भी भय खाते थे। पिछले डेढ़ साल में नक्सलियों के सफाए के लिए जिस तरह अभियान चला और सफलता मिली यह काबिले तारीफ़ है। नक्सलियों के खात्मे में सफलता राज्य की विष्णुदेव साय सरकार की बड़ी उपलब्धि है। पिछले दिनों छत्तीसगढ़ और तेलंगाना सीमा पर करेंगुट्टा की पहाड़ियों में सुरक्षा बलों ने जिस तरह नक्सलियों के पनागाह को नेस्तनाबूत किया, उससे तो राज्य में नक्सलियों की कमर ही टूट गई। संयुक्त मध्यप्रदेश रहते और अलग राज्य बनने के बाद बस्तर से नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए लगातार कोशिशें होती रही हैं। इस कोशिश में कई जवान शहीद हुए। नक्सलियों ने मुखबिरी के आरोप में कई बेगुनाहों की जानें भी लीं। अब लगता है कि डेढ़ साल के आपरेशन में छत्तीसगढ़ से नक्सलियों के ताबूत पर कील ठोंक दी गई है। नक्सली सिर नहीं उठा पाएंगे और छत्तीसगढ़ पर नक्सल प्रभावित राज्य होने का दाग भी मिट जाएगा। नक्सली शांति वार्ता की बात कर रहे हैं, इसका मतलब साफ़ है कि वे कमजोर हो गए हैं और सुरक्षाबलों के आगे टिक नहीं पा रहे हैं।

मंत्री और कलेक्टर के बीच तकरार

कहते हैं कि छत्तीसगढ़ के एक कैबिनेट मंत्री की एक कलेक्टर से तकरार हो गई। चर्चा है कि पिछले दिनों केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के मुख्य आतिथ्य में आयोजित एक कार्यक्रम में स्वागतकर्ताओं की सूची में मंत्री जी का नाम ही नहीं था। बाद में भूल सुधार की गई, लेकिन बात का बतंगड़ बन ही गया। शिवराज सिंह का कार्यक्रम जिस संभाग मुख्यालय में आयोजित किया गया था, मंत्री जी उसी संभाग से आते हैं, फिर भी स्वागतकर्ताओं में मंत्री जी का नाम न होना, सबको आश्चर्य हुआ। मंत्री जी को भी ऐसी उपेक्षा की उम्मीद नहीं थी। मंच पर मौजूद मंत्रियों और अन्य नेताओं का नाम स्वागत के लिए पुकारा गया,पर मंच में मौजूद रहने के बाद भी मंत्री जी को नहीं पुकारा गया। गलती का अहसास होने पर आखिर में स्वागत के लिए मंत्री का नाम पुकारा गया, पर मंत्री जी को यह चुभ गया। बताते हैं कि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद मंत्री जी ने जिले के कलेक्टर साहब को चूक के लिए फटकार लगाई। जानकारों का कहना है कि दोनों में गर्मागर्म बहस भी हुई। खबर है कि मंत्री जी की फटकार से खफा कलेक्टर ने घटना की शिकायत अपने उच्चाधिकारियों से की। बताते हैं उच्चाधिकारियों ने कलेक्टर साहब को ढांढस बंधाया है। वैसे कलेक्टर को अपने सुर में चलने वाला बताया जाता है। अब देखते हैं आगे क्या होता है, पर इस घटना की बड़ी चर्चा है।

भारतमाला के जाल में उलझे आईएएस

कहते हैं कि छत्तीसगढ़ के एक आईएएस अफसर भारतमाला परियोजना के जाल में बुरी तरह उलझ गए हैं। चर्चा है कि आईएएस अफसर ने एक संस्था की जमीन को अपने नाम रजिस्ट्री करवाकर मुआवजा ले ली थी। भारतमाला परियोजना में गड़बड़ी की जांच होने और कुछ लोगों के जेल जाने के बाद आईएएस की भी नींद हराम हो गई है। बताते हैं कि आईएएस ने अब जाँच से बचने के लिए संस्था को जमीन लौटने के लिए तैयार हो गए हैं। खबर है कि भारतमाला परियोजना में फायदा लेने के लिए एक महिला आईएएस अफसर ने अपने कुछ रिश्तेदारों के नाम से जमीन खरीदी थी। बताते हैं कि रिश्तेदारों के नाम पर मुआवजा की राशि भी मिल गई है। चर्चा है कि जांच एजेंसियां भारतमाला परियोजना की गड़बड़ी की तह तक पहुंचने में जुट गई हैं। कहा जा रहा है जिस तरह के खुलासे हो रहे हैं उससे लग रहा है कि भारतमाला परियोजना में पूरी दाल ही काली नजर आ रही है।

गौतम के पूर्णकालिक डीजीपी बनने के आसार

कहा जा रहा है कि 1992 बैच के आईपीएस अरुणदेव गौतम छत्तीसगढ़ के पूर्णकालिक डीजीपी बन सकते हैं। गौतम अभी कार्यवाहक डीजीपी हैं। बताते हैं पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के पूर्णकालिक डीजीपी के लिए यूपीएससी में बैठक हुई। इसमें छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव अमिताभ जैन भी शामिल हुए थे। यूपीएससी की बैठक की कार्यवाही का विवरण अभी राज्य शासन को नहीं भेजा गया है। माना जा रहा है कि अगले हफ्ते तक कार्यवाही का विवरण आ जाएगा। बताते हैं कि यूपीएससी छत्तीसगढ़ के नए डीजीपी के लिए तीन अफसरों का पैनल भेजेगा। पैनल में से एक नाम का चयन राज्य सरकार को करना है। अरुणदेव गौतम अभी प्रभारी डीजीपी हैं, इस कारण उनके पूर्णकालिक डीजीपी बनने के संभावना ज्यादा है। चर्चा है कि डीजीपी के पैनल में 1992 बैच के अफसर अरुणदेव गौतम और पवनदेव के अलावा 1994 बैच के अफसर जीपी सिंह का नाम हो सकता है। 1994 बैच के अफसर हिमांशु गुप्ता डीजीपी की दौड़ से बाहर बताए जा रहे हैं।

डीजी का एक पद सृजित करने यूपीएससी को प्रस्ताव

खबर है कि छत्तीसगढ़ में डीजी का एक पद सृजित करने के लिए राज्य सरकार यूपीएससी को प्रस्ताव भेजने की तैयारी में है। बताते हैं कि इस पद के विरुद्ध 1994 बैच के आईपीएस हिमांशु गुप्ता की पदस्थापना होनी है। हिमांशु गुप्ता डीजी के पद पर पदोन्नत हो चुके हैं, लेकिन 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह की सेवा में बहाली और डीजी के पद पर पदोन्नत होने के बाद हिमांशु गुप्ता का नाम वरिष्ठता सूची में नीचे हो गया। वर्तमान में डीजी के तीन पद के विरुद्ध अरुणदेव गौतम, पवनदेव और जीपी सिंह हैं। बताते हैं राज्य के गृह विभाग ने हिमांशु गुप्ता के लिए डीजी का पद निर्मित करने का प्रस्ताव वित्त विभाग को भेजा था। वित्त विभाग ने यूपीएससी से अनुमति के बाद पद सृजित करने की अनुशंसा की है। इसके बाद अब गृह विभाग डीजी का एक पद सृजित करने के लिए यूपीएससी को प्रस्ताव भेजने की तैयारी में है।

टीवी चैनल में मंत्री जी का निवेश

चर्चा है कि राज्य के एक मंत्री जी को मीडिया का चस्का लग गया है। खबर है कि मंत्री जी ने एक रीजनल चैनल में कुछ इन्वेस्टमेंट किया है। अब मंत्री जी कितने नफे-नुकसान में रहते हैं, यह तो समय ही बताएगा? मंत्री जी पहली बार विधायक बने हैं और उनके पास कमाई वाले विभाग भी हैं। इस कारण आमदानी को कहीं न कहीं तो खपाना पड़ेगा ही। आमतौर पर मीडिया में उद्योगपतियों के इन्वेस्टमेंट की खबरें आतीं हैं। पहली दफा मंत्री के मीडिया में निवेश की चर्चा सामने आई है। वैसे कुछ नेता-विधायकों के इन्वेंस्टमेंट राजधानी के अस्पतालों में होने की भी खबर है। कहते हैं मंत्री जी ने जिस चैनल में पैसा लगाया है, अभी वह दो राज्यों में चल रहा है।

एक एचओडी से परेशान मातहत

कहते हैं पढ़ने-पढ़ाने वाले विभाग के एक एचओडी से उनके मातहत बड़े परेशान हैं। एचओडी साहब के बारे में चर्चा है कि न तो आपने मातहतों से ठीक से बात करते और न ही उनकी समस्याओं का समाधान करते। न तो वे उम्र का ख्याल रखते और न ही पद का और मातहतों को फटकार लगाने लग जाते हैं। अफसर महोदय को एचओडी बने ज्यादा दिन हुए नहीं हैं, पर स्टाफ के लोग उनके कामकाज और तौर-तरीके से असहज महसूस करने लगे हैं। एचओडी साहब के पास कई चार्ज होने से मातहतों को उनके आने का इंतजार भी करते रहना पड़ता है। अब देखते हैं मातहतों का गुस्सा फूटता है या साहब बदलते हैं?